

226.2

शास्त्री। शिला। त



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती



२२६.२
स्त्री। शित

लेखकः - ज्योतिर्वित् श्रीपण्डितशिवदत्तशास्त्री
व्या० आ० आ० कर्मकाण्डविशारदः ।

मूल्यमस्यप्रेम्णाध्ययनम् ।



॥ श्री तन्त्रदुर्गसिप्तशती ॥

(संशोधिता परिवर्द्धिता च)

०५०० देव विष्णव विष्णव श्रीमद्भागवत

०५००

०५०० दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा

०५००

०५०० दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा ०५०० (१)

०५००

०५०० दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा

०५००

०५०० दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा

०५००

लेखक :-

ज्योतिवित् श्रीपं० शिवदत्त त्रिपाठी, शास्त्री

व्या० आ० आ० कर्मकाण्डविशारदः

स्थान=सलेमपुर, पो०-अछलदा, मण्डल-इटाबा [उ० प्र०]

प्रकाशक :—श्री कुमुदेश चन्द्र जैन

स्थान—४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज

कानपुर-१ (उ०प्र०)

फोन नं० ६३४१९

२२६.२
श्री अमर चन्द्र जैन

मुद्रक :—एलोरा प्रिन्टर्स, सूटरगंज कानपुर-१ फोन : ४०५२७

प्रथमावृत्ति- चैत्रसुदि ९ नवमी बुधवार संवत् २०३०

ता० ११-४-७३

द्वितीयावृत्ति- २०३३ सन् १९७६

पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

(१) श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी एम. ए., एल. टी., डी. जी. पी.

लेक्चरार

संस्कृत मंकाल नं० ७३ मोहल्ला ठाकुरान
म० प० लखना, जि० इटावा (उ०प्र०)

पुस्तक नं० ८३९६

(२) कुमुदेश चन्द्र जैन

४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज,

कानपुर-१ (उ०प्र०)

सङ्केतः— इस पुस्तक का मूल्य नहीं है लोक कल्याणार्थ ही प्रकाशित की गई है। डाक व्यय मेजने पर पुस्तक निःशुल्क भेज दी जायेगी।

अपने पितामह

लाला

स्व० श्री अमर चन्द्र जौ जैन

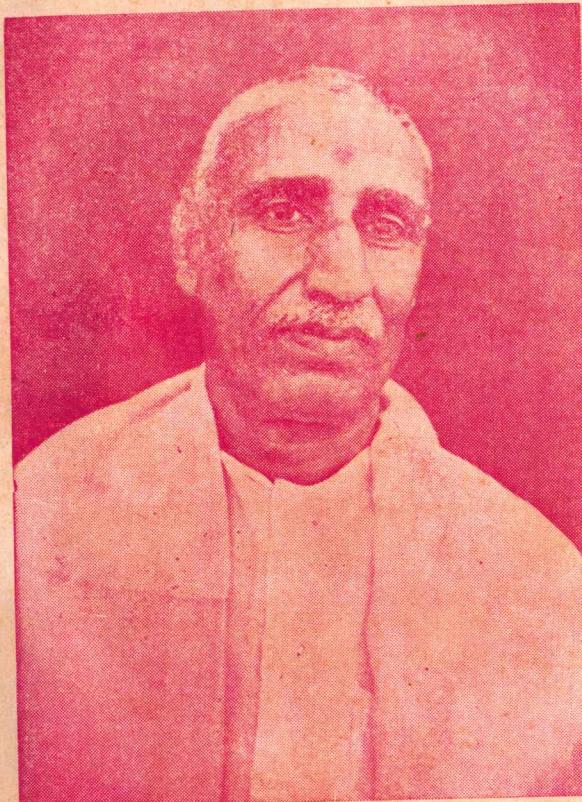
को

पुण्य स्मृति में

प्रकाशित

—कुमुदेश चन्द्र जैन

❖ श्रीमद्गुरवेनम् ❖
(श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीलेखकः)

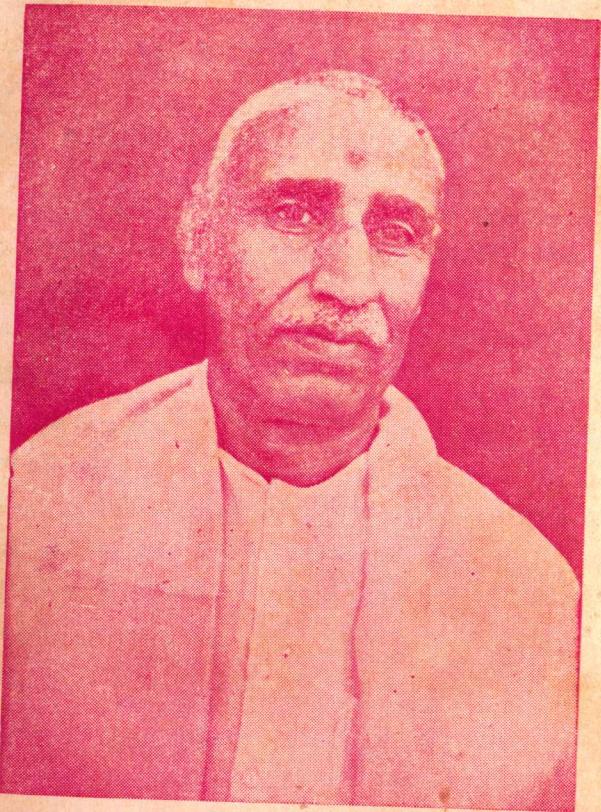


"आदिशक्तयेनमः"

सकलभुवनसारांविश्वपूज्यामपारा
भवजालनिधिपारांप्रेमवापीविहाराम्
अमलकमलहारान्नष्टदीनार्तंभारां
हृतहृदयविकारान्नौमिदुर्गामुदाराम्

‘श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती’ ‘श्रीगुरुस्तोत्र’ व श्रीशिवस्तोत्र
आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता, एवं श्रीशिवसूत्ररहस्य आदि
ग्रन्थ लेखक-प्रवक्ता-ज्यौतिष-व्याकरण-तन्त्रसाहित्य-धर्मशास्त्र
आदि के अति सुयोग्य विद्वान्-परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-
प्रातः स्मरणीय श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

ॐ श्रीमद्गुरवेनमः ॐ
(श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीलेखकः)



‘श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती’ ‘श्रीगुरुस्तोत्र’ व श्रीशिवस्तोत्र
आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता, एवं श्रीशिवसूत्ररहस्य आदि
ग्रन्थ लेखक·प्रवक्ता·ज्यौतिष·व्याकरण·तन्त्रसाहित्य·धर्मशास्त्र
आदि के अति सुयोग्य विद्वान्--परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-
प्रातः स्मरणीय श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

आवश्यक वक्तव्य

श्री दुर्गासिष्ठशती आदि के पाठ व जप आदि में

- (१) अध्यायपूर्ति होने पर “श्रीमार्कण्डेयपुराण सावर्णि केमन्वन्तरे देवीमहा-हात्म्ये प्रथमः ३० तत्सत्” कहना चाहिये । एवमेव द्वितीयः, तृतीयः, चतुर्थः, आदि कहना चाहिये ।
- (२) इति, अध्याय, वध, तथा समाप्त, इन शब्दों का उच्चारण नहीं करना चाहिए ।
- (३) अपने हाथ से लिखित तथा ब्रह्मणेतर से लिखित पुस्तक का पाठ नहीं करना चाहिये ।
- (४) स्तोत्र व संहिता ग्रन्थों में अन्तिम श्लोक दोवार पढ़ना चाहिए “स्तोत्रेच संहितायान्तु चान्तःश्लोकंठेद्द्विद्या” इतिरुद्रयाले इसप्रमाणासे त्रयोदश अध्याय के समाप्ति में अन्तिम श्लोक दो बार कहना चाहिये ।
- (५) एवमेव-नमस्कार का जहां प्रसङ्ग हो वहां दो बार या तीनबार कहना चाहिए । नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यैनमोनमः इत्यादि ।

गणना के लिये वस्तुविचार

श्लोक— नाक्षतैर्हस्तपवैर्वानधान्यैर्नचपुष्पकैः ।
न चन्दनैर्मृत्तिक्या जपसङ्ख्यान्तुकारयेन ॥१॥

लाक्षांकुसीदं सिन्दूरं गोमयञ्चकरीषिकङ्ग् इत्यादि—अर्थात् चावल-हस्त के पर्व-धान्य-पुष्प-चन्दन-मृत्तिको से जप की गणना नहीं करना चाहिये । गोवर की गोली-लाख व सिन्दूर आदि की गोली से जप की गणना करें ।

(७) अनेकआचार्य हुये हैं प्रत्येक ने अपने मत को ही श्रेष्ठ मानकर स्पष्ट लिख दिया है कि ऐसा न करने पर पाठ निष्फल हो जाता है। समस्तन्यास शापो द्वार-उत्कीलन-मृतसञ्जीवनी जप, कुञ्जिकास्तोत्र, कवच, अर्गला, कीलक पाठ-अन्त में रहस्यत्रयपाठ-वेदोक्त, तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त पाठ-मुद्राप्रदंशन वेदोक्त पौराणिक व तान्त्रिक विधि से पूजन विधान, नवार्णमन्त्रजप आदि अनेक विधान वतलाये हैं। शायद ही ऐसा कोई सामर्थ्यवान् न हो जो सभी विधान करके पाठ पूर्ण कर सके। यदि कोई सब विधान करके पाठ करता है तो वह प्रशंसा के योग्य है। कलियुग में अभीष्ट देवता का गुणागानही शीघ्र समस्त फलदायक होता है। जितना विधान करने में मन प्रसन्न रहे उतना ही करे वो जितना विधान अधिक्यान्यून करना हो उतना सङ्कल्पमे अधिक या न्यूनकर देना चाहिये।

विशेषसङ्केत

श्री तन्त्र दुर्गासप्तशती, प्रकाशित होने पर जब विद्वानों में वितरण की गई सभी लोगों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की तथा जिन लोगों के पास अति प्राचीन हस्त लिखित श्री दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्र, बीजरूप में ये तथा बम्बई तथा बाराणसी में प्राचीन समय में ७०० मन्त्रतन्त्र रूप में प्रकाशित हो चके हैं। जिन लोगों के पास थे प्रायः अधिक लोगों ने देखने के लिए मेरे पास भेजे तथा ला कर दिये मैंने अपनी मुद्रित पुस्तक से मिलान किया प्रायः सभी मन्त्रों का मिलान एक सा रहा। कुछ ही मन्त्रों में अन्तर निकला। अधिक प्रतियों से उनका मिलान करके संशोधन कर दिया है।

पाठक गण यथेच्छ कोई भी मन्त्र का पाठ या जपकर सकते हैं। सभी बीजमन्त्र शुद्ध हैं। प्राप्त प्रतियों में भी स्थान स्थान में लिखाथा कि वविचित् पाठमेदः अर्थात् बीजमन्त्रों में भेद लिखे थे। अतः सभी मन्त्र शुद्ध जानना चाहिये। यदि मेरी मुद्रित पुस्तक में संशोधित बीजमन्त्रों का पाठ या

जप न करके वैसे ही पाठ या जप में प्रयोग किये जाये तो भी सिद्धिप्रद होंग। वविचित् पाठमेद, लिखकर वै भी मन्त्र लिखे थे। कुल १० या १२ मन्त्रों में परिवर्तन है।

विशेष आवश्यक निवेदन

तन्त्रदुर्गासप्तशती के पाठ में कवच अर्गला कीलक का पाठ तथा मृतसञ्जीवनी विद्यामन्त्र जप कुञ्जिकास्तोत्र पाठ-रहस्यत्रय-पाठ आदि करने की कीई भी आवश्यकतान ही हैं केवल आदि में तथा अन्त में यथच्छ (न्यूनसेन्यून १०८ वार) नवार्णमन्त्र जप परमावश्यक है। यही सिद्धान्त महात्माओं व विद्वद्वन्द से तथा प्रकाशित एवं हस्तलिखित प्रतियों में निश्चित है।

भ्रम निवारण

श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशती के ७०० मन्त्रों में प्रति मन्त्र में “ऐ” इस बीज का प्रयोग किया गया है। यह शङ्का पाठक जनों ने की थी इसका समाधान तन्त्र कोष में सुस्पष्ट है कि— ‘ऐ’ यह बीज अनेक शक्तियों का बीज है सरस्वती के बीज की तरह ‘दुर्गा’ का प्रधान बीज होने से ‘ऐ’ इस बीज का प्रयोग प्रति मन्त्र में किया गया है। इसके अतिरिक्त और जो रहस्य हो वह विद्वद्वन्द जाने। नवार्ण मन्त्र में “ॐ” नहीं लगाना चाहिए विशेष निर्णय आगे लिखा है।

सङ्केत- इस पुस्तक में तन्त्र मन्त्रों से अतिरिक्त सभी विषय अन्यान्य प्रमाणित ग्रन्थों से लिये हैं। श्रीकुमुदेशचन्द्र जी जैन मकान नं० ४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज कानपुर की विशेष प्रार्थना पर यह पुस्तक प्रकाशित करने को दी। श्री कुमुदेश चन्द्रजी भगवती श्रीदुर्गादिवी के परम भक्त हैं कामाख्या आदि स्थानों में सुचारूरीति से भ्रमणकर चुके हैं आपने ही मेरा लिखित “श्री शिवसूत्ररहस्यम्” नामका ग्रन्थ प्रकाशित किया है जो अभी तक प्रकाशित था अर्थात् जिसमें अड्डण,, आदि १४ सूत्रों में ज्यौतिष तन्त्र मन्त्रादि विषय विस्तार पूर्वक वर्णन किये हैं।

मुजन समुदाय से नम्रनिवेदन है कि यदि दुर्गास्पती के ७०० मन्त्रों का तन्त्ररूप में परिणत करने का मूलाधार ज्ञात हो तथा इस पुस्तक में जो मुद्रण आदि दोष रह गये हों तो अवश्य सूचित करने की कृपा करें ताकि अग्रिम संस्करण में उनका सुधार हो सके।

यदत्रस्खलितङ् किञ्चित् प्रमादेन भ्रमेणवा ।

तत्सर्वं शोधयन्त्वार्याः कस्यन स्खलितम् मनः ॥१॥

गच्छतः स्खलनङ् क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥२॥

विनीत-शिवदत्त शास्त्री

सङ्केत- कवच, अर्गला, कोलक के पूर्व शापोद्वारउत्कीर्ण तथा मृत संजीवनी विद्या का जप का विधान है, किन्तु विद्वत्परम्परा का सिद्धान्त यह है कि यदि श्री दुर्गास्पतशती का षड्ङ्ग (कवक^१, अर्गला^२, कीलक^३ तथा त्रयोदशाध्याय के बाद रहस्यत्रय) सहित पाठ कर लिया जाय तो श्रीदुर्गास्पतशती में शापोद्वारादि की कोई भी आवश्यकता नहीं है। वस्ततः यही मत

प्राककथन

यह तन्त्र रूप में परिणत श्रीतन्त्र दुर्गास्पतशती, संवत् २००० आश्वनमास में विन्ध्याचल (जिं मिर्जापुर उ० प्र०) में भगवती जगन्नियन्त्री जगदम्बा श्री विन्ध्यवासिनी देवी के दर्शनार्थ आये हुये एक महात्माजी की अति प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से लिखने के लिये उनतपो मूर्ति महात्मा जी की विशेष प्रार्थना करने पर लिखने की आज्ञा पाकर लिखकर तथा बहुत समय तक अनुभव करके सत्य प्रतीत होने पर प्रकाशित करने पर विद्वानों ने भी पूर्ण रूप से अनुभव किया तथा सफल हुये, अतएव प्रथमवृत्ति शीघ्र समाप्ति हुई।

महात्मा एवं विद्वानों ने यह आज्ञादी कि द्वितीयावृत्ति शीघ्र प्रकाशित की जाये कि जिसमें पाठ करने योग्य श्रीतन्त्रदुर्गास्पतशती तथा संशोधित व परिवर्द्धित परमोपयोगी विषय भी रखके जायें। उन्हीं महात्माओं एवं विद्वानों की आज्ञानुसार द्वितीयावृत्ति भी उसी रूप में प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में सादर समर्पित है। प्रथमावृत्ति वितरित होने पर

दयालु महात्मा एवं विद्वानों ने अतिप्राचीन हस्तलिखित तन्त्र रूप में परिणत दुर्गास्पतशती के ७०० मन्त्र दिखालाये तथा बम्बई व बाराणसी से प्रकाशित प्रतियां भी देखने में आई। प्रायः सभी मन्त्र मेरे प्रकाशित मन्त्रों से अक्षरशः मिले मूँझे विशेषसन्तोषप्राप्त हुआ। कुछ मन्त्रों में अन्तर निकला बहुत मत से संशोधित करके प्रकाशित हैं। यह मैं नहीं कह सकता हूँ कि श्री दुर्गास्पतशती के ७०० मन्त्रों का तन्त्ररूप में परिणत किस मूलाधार से है इतना अवश्य है कि पाठ व जप करने से सभी प्रयोग सफल होते हैं।

मेरी भी गुरुपरम्परा का है। अथवा जैसा विद्वद्वन्द निर्णय करें वैसा स्वेच्छा-नुसार करें। यह निर्णय दुर्गा सप्तशती के पाठ ही का है तन्त्र दुर्गासप्तशती के पाठ में षड्ज़ पाठ भी नहीं करना चाहिये।

शापोद्धारमन्त्र-३० हों क्लीं श्रीं क्रांक्रीं चण्डिकादेव्यै
शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा। आदि तथा अन्त
में ७ वार जपे।

उत्कीलनमन्त्र-३० श्रीं क्लीं हों सप्तशतिचण्डिके उत्की-
लनकुरु कुरु स्वाहा। आदि तथा अन्त में २१
वार जपे।

मृतसंजीवनीविद्यामन्त्र-३० हों हों वं वं एं एं मृत
संजोवनिविद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं हों हों वं
स्वाहा। आदि तथा अन्त में ७-७ वार जपे।

सङ्केत- मरीचकल्प तथा रुद्रयायलान्तर्गत दुर्गाकिल्प में चन्दिकाशाप-
विमोचन विधान भिन्न २ क्रम से लिखा है। श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती में षड्ज़-
पाठ करने की आवश्यकता नहीं है। आदि तथा अन्त में नवार्णमन्त्र जपना
आवश्यक है।

विशेष आवश्यक सङ्केत

जिस स्थान में भगवती देवी की मूर्ति हो वहां श्रीदुर्गा पूजा यन्त्र आदि
कुछ भी विधान की आवश्यकता नहीं है। वहां तो भगगती ही यन्त्रादि रूप
में वर्तमान है। एवम् जहां शतचण्डी आदि अनुष्टान करना या करवाना हो
वहां तथा जहां भगवती की मूर्ति न हो वहां समस्त विधान शत्यनुसार करे।
दैनिक पूजन पाठ व जप में समस्त विधान की आवश्यकता नहीं है।

कलियुग में अभीष्ट देवता का गुणगान ही समस्त कल्याणप्रदहोता
है। विशेष विधान के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। केवल श्रद्धा-विश्वास तथा
मनकी एकाग्रता ही प्रधान मानी गई है। प्रत्येक अनुष्टान-पूजन व जप आदि
में शास्त्र-देश-काल व अपनी सामर्थ्य देखकर के ही प्रवृत्त होना चाहिये।

श्रीदुर्गासप्तशती में कवच

शूलेनपाहिनो देवि पाहिखङ्गेनचाम्बिके ।
घण्डास्वनेननः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥१॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याऽच्च चण्डिके रक्ष चण्डिके ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥२॥
सौम्यानियानि रूपणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानिचात्यर्थधोराणि तैरक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥३॥
खङ्गशूलगदादीनियानिचास्त्राणितेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गोनितैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥४॥

कवच के तन्त्र रूप में क्रमशः मन्त्र—

ॐ एं फें नमः ॥१॥ ॐ एं क्रीं नमः ॥२॥ ॐ एं म्लूं नमः ।
ॐ एं घ्रें नमः ।

शारदातिलक पञ्चमपटल में हवन वस्तुयें

- १- अध्याय- गुग्गुल वा विल्वफलहोम (तूतीयांश होम करना चाहिये)
- २- „ इक्षु (ऊँख) का हवन। पर्वमात्र प्रतिआहुति में हवन।
- ३- „ ३८वें मन्त्र में मधु। अध्यायान्त में नार (नारङ्गी) हवन।

- ४- " लवज्ज हवन ।
 ५- " कदलीफल (केला की फलों का) हवन ।
 ६- " गुग्गुल होम वा जम्बीर फल (नीबू) का हवन ।
 ७- " २३वें मन्त्र में काला जीरा हवन ।
 ८- " रक्तबीज प्रसज्ज में रक्त चन्दन हवन । अध्यायान्त में तज
का हवन ।
 ९- " ३५वें मन्त्र में सर्षप (सरसों) काहवन । अन्त में कर्पूर-
कस्तुरी हवन ।
 १०- " २६वें मन्त्र में सर्षप (सरसों) हवन । अन्त में जावित्री-लवज्ज-
दाढ़िमफलहोम ।
 ११- " पायस (खीर) पूप (पुआ) हवन । ३९वें मन्त्र में
कालीमिर्च हवन ।
 १२- " कर्पूरदाढ़िमहवन ।
 १३- " श्रीफल-कुञ्जमहोम ।

सङ्केत-उपरिलिखित कवच के चार मन्त्रों में हवन नहीं करना चाहिए ।

प्रकाशकीय वक्तव्य

(द्वितीया वृत्ति पर)

यह प्रसज्ज अनेकों बार महात्माओं से सुना था कि ७०० श्रीदुर्गासित्त-
शती के मन्त्रों का तन्त्र रूप में वर्णन है, किन्तु विशेष अन्वेषण करने पर
तथा कामरूपा आदि स्थानों में भ्रमण करके पता लगाने पर भी तन्त्र रूप में
७०० मन्त्र श्री दुर्गासित्तशती के नहीं मिले । इतना होने पर भी अन्वेषण
करने का प्रयत्न बराबर बना ही रहा था एक समय परम पूज्य श्री १०८
गुरुदेव श्री पं० शिवदत्तजी त्रिपाठी शास्त्री ज्योतिर्वित्-कर्मकाण्ड विशारद
व्याकरणायुवेदाचार्य-श्री शिवसूत्ररहस्यम् आदि अनेक ग्रन्थों के लेखक व्रतका
से तन्त्र रूप में परिणत श्रीदुर्गासित्तशती के ७०० मन्त्रों का विवरण पूछा तो
उन्होंने लिखित पुस्तक मुझे दिखलाई थी मैंने मुद्रण करने के लिए उनसे
विशेष प्रार्थना की उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके वह पुस्तक दी आज
पुस्तक द्वितीयावृत्ति में भी प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में सादर
समर्पित है । पुस्तक का कोई मूल्य नहीं हैं प्रेम से भगवती को सुनाना ही
इसका मूल्य है ।

नम् निवेदन यह है मानवता स्वभाववश अशुद्धियों का होना स्वा-
भाविक है जहाँ जो भी अशुद्धि रह गई हो तथा यान्त्रादि दोष हों वहाँ सुधार
लें तथा सूचित करने की कृपा करें । ताकि अग्रिम संस्करण में सुधार हों सके ।
पुस्तक को निःशुल्क समझकर दुरुपयोग न करने का ध्यान रहे । प्रकाशक
एवम् लेखक के परिश्रम को सफल बनाने की कृपा रहे ।

सङ्केत-इस पुस्तक में केवल त्रयोदश अध्याय ही श्री तन्त्ररूप में परि-
णत दुर्गासित्तशती, के श्रीमान् पूज्य १०८ श्री पं० शिवदत्तजी शास्त्री को
किसी सिद्ध महात्माजी की अतिप्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से प्राप्त हुये थे ।
शेष अन्य सभी विषय श्रीमान् परमपूज्य शास्त्री जी ने अन्याय प्रमाणित
ग्रन्थों से लिखकर पूर्ण किये हैं ।

भवदीयानुचरः
कुमुदेशचन्द्र जैन

॥ आदिशक्तयेनमः ॥

॥ श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती ॥

१०४ विश्वेश्वरींविश्वमयींविरूपा-

मज्जानहन्त्रींविमलस्वरूपाम् ।

शश्वत्प्रसन्नाङ्करुणावतारान्-

तन्त्रस्वरूपाङ्चनमार्मिदुर्गामि ॥१॥

चिदानन्दरूपे हरीशादिवन्द्ये-

सदामन्दहासे जगद्भीतिनाशे ।

चिदानन्ददेत्वच्च तन्त्रस्वरूपे-

जनं पाहिदीनन्तवार्चाविहीनम् ॥२॥

नजानातिविष्णुःशिवोनैववेत्ति-

स्वयम्भूः स्वयन्नैवजानातिमातः ।

चरित्रन्दयाधारिकेतेविचित्रङ्-

कथन्मन्दवृद्धिर्जनःस्यात् समर्थ ॥३॥

तथाप्यम्बलोलोपकारायलोके-

चरित्रं वदाम्यत्र किञ्चित्प्रसिद्धम् ।

तवप्रेरणैवाभवद्हेतुभूता-

मदीयेहृदबजेमहादेविदुगे ॥४॥

॥ पाठविधि ॥

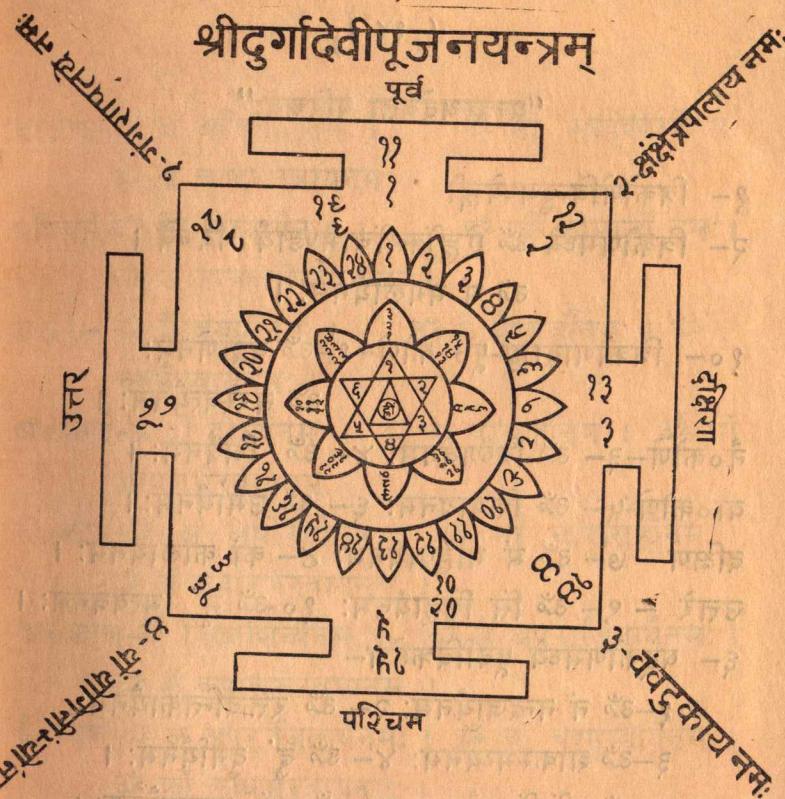
साधन स्नान करके पवित्र हो आसन शुद्धि की क्रिया सम्पन्न करके पूर्वाभिमुख हो शुद्ध आसान पर बैठे साथ में शुद्ध जल (गङ्गाजल आदि) पूजन सामग्री और श्री तन्त्रदुर्गा सप्तशती की पुस्तक रखें। मस्तक में अपने रुचि के अनुसार भस्म, चन्दन, रोली अथवा सेंदुर लगाले। शिखा बांध ले। तत्व शुद्धि के लिए चार वार आचमन करें। तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करें। कुश की पवित्री धारण करके हाथ में लाल फूल, चावल और जल लेकर निम्नाङ्कित रूप से संकल्प करें।

३५ विष्णुविष्णुविष्णुः । ३५ नमः परमात्मने, श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्या प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्राह्मणोऽह्नि द्वितीयपराङ्मेश्रीश्वेतवाराहकल्पेवैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशति—तमेकलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यवर्तन्तर्गत ब्रह्मावत्तेकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे अमुकायने अमुकमाङ्गल्यप्रदे मासानामुत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्य अमुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौभवुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्तकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माहिं ममात्मनः सपुत्रवान्धवस्य श्रीनवदुर्गनिग्रहतो ग्रहकृत

राजकृतादि सर्वविधीपीडानिवृत्तिपूर्वकन्नैरुज्यदोधर्युः पुष्टि
धनधान्यसमृद्धयर्थं श्रीनवदुर्गाप्रिसादेन सर्वपित्रिवृत्ति
सर्वाभीष्ट फलावाप्ति धर्मार्थं काममोक्षचतुर्विधिपुरु-
षार्थसिद्धि द्वारा श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती
देवताप्रीत्यर्थं तन्त्रोक्तरात्रिसूक्तं पाठन्यास विधि सहित
नवार्णजपं तान्त्रिकसप्तशती न्यासध्यानं पूर्वकञ्च ॥३० ऐं
श्रीनमः ३० ऐं हीं नमः । इत्याद्यारभ्य ३० ऐं ओंनमः
इत्यन्तन्त्ररूपेण परिणतं श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती पाठं तदन्ते
च न्यास विधिसहित नवार्णजपतान्त्रिक सप्तशती न्यासध्यानं
पूर्वकं तान्त्रिक देवीसूक्तं पाठञ्च करिष्ये ।

(यदि दूसरे से पाठादि कर बाना हो तो कारयिष्ये, कहना चाहिये)

इस प्रकार सङ्कल्प करके भगवती श्री दुर्गादेवी का ध्यान करते हुये
पञ्चोपचार विधि से पुस्तक की पूजा करे । यदि ज्ञात होतो योनिमुद्रा
प्रदर्शित करके भगवती को प्रणाम करे । पश्चात् नवार्णमन्त्र से पीठ में
आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराज मान करे ।
पश्चात् यदि ज्ञात हो अन्तर्मतृ का वहिमर्तिका आदिन्यास करे अन्यथा नहीं ।
पश्चात् भगवती का ध्यान व पूजन आगे लिखित श्री दुर्गा पूजायन्त्र में करें ।



॥ यन्त्रविवरणम् ॥

त्रिकोणे-३ । त्रिकोणाद्वाह्ये-१० । षट्कोणेयु-६ । अष्टपत्रेषु २४ ।
चतुर्विशतिदलेषु-२४ । तद्यथा-१-विष्णुमाया । २-चेतना । ३-वृद्धि ।
४-निद्रा । ५-क्षुधा । ६-छाया । ७-शक्ति । ८-तृष्णा । ९-क्षान्ति ।
१०-जाति । ११-लज्जा । १२-शान्ति । १३-श्रद्धा । १४-कान्ति ।
१५-लक्ष्मी । १६-धृति । १७-वृत्ति । १८-स्मृति । १९-दया । २०-तुष्टि ।
२१-पुष्टि । २२-मातृ । २३-भ्रान्ति । २४-चिति । चतुर्विशतिदलेभ्योवाह्ये
१०-ततोदिक्पालायुधवाहनादि २० । ततोभूपुरवाह्ये ४ ।

(१४)

“यन्त्रस्थदेवता परिचयः”

- १- त्रिकोणेविन्दुमध्येत्तीं
- २- त्रिकोणमध्ये ॐ ऐत्तींकलींचामुण्डायै विच्चे ।
ॐ मं मंगलायैनमः ।
- ३०- त्रिकोणाद्वाह्ये-पू० कोणे-१-३० ब्रह्मणेनमः
३० सरस्वत्यैनमः ।
- नै०कोणे-३- ३० विष्णवेनमः ४- ३० श्रियैनमः ।
- वा०कोणे-५- ३० शिवायनमः ६- ३० उमायैनमः ।
- दक्षिणे - ७- ३० मं महिषायनमः ८- कां कालायनमः ।
- उत्तरे - ९- ३० सि सिंहायनमः १०-३० मृं मृत्यवेनमः ।
- ६- षट्कोणमध्ये पूर्वादिक्रमेण-
 - १-३० नं नन्दजायैनमः २- ३० रक्तदन्तिकायैनमः
 - ३-३० शाकम्भर्यैनमः ४- ३० दुं दुर्गायैनमः ।
 - ५-३० भीमभीमायैनमः ६- ३० भ्रां भ्रामयैनमः ।
- केचिन्मतेऽत्रैवमहिषादीनांस्थापनादि

दक्षिणे-३० मं महिषायनमः ३० कां कालायनमः ।

उत्तरे-३० सि सिंहायनमः ३० मृं मृत्यवेनमः ।
- २४-अष्टपत्रेषु पूर्वादिक्रमेण-
- पूर्वे- ॐ जं जयायैनमः । ॐ वां ब्राह्म्यैनमः । ॐ अं असिताङ्गभैरवायनमः

(१५)

- दक्षिणे-३० अं अजितायैनमः । ॐ मां माहेश्वर्यैनमः
३० चं चण्डभैरवायनमः ।
- पश्चिमे-३० नि नित्यायैनमः । ॐ कौमार्यै नमः ।
३० उं उन्मत्तभैरवायनमः ।
- उत्तरे- ॐ विजयायैनमः । ॐ वैं वैष्णव्यैनमः । ॐ हुं रुभैरवायनमः ।
- अ०कोणे-ऊं द्रों द्रोष्यैनमः । ॐ वां वाराह्यैनमः । ॐ भीं भीषणभैरवायनमः ।
- नै०कोणे-३० अं अघोरायैनमः । ॐ नां नारसिंह्यैनमः ।
३० सं संहारभैरवायनमः ।
- वा०कोणे-३० विलाशिन्यैनमः । ॐ अं अपराजितायैनमः ।
३० कं कपालभैरवायनमः ।
- ई०कोणे-३० अं अपराजितायैनमः । ॐ चां चामुण्डायैनमः ।
३० क्रों क्रोधभैरवायनमः ।
- २४-ततश्चतुर्विशतिदलेषु पूर्वादिक्रमेण-
- ३० विं विष्णुमायायैनमः ॥१॥ ३० चें चेतनायैनमः ॥२॥
- ३० वुं वुद्ध्यैनमः ॥३॥ ३० नि निद्रायैनमः ॥४॥
- ३० क्षुं क्षुधायैनमः ॥५॥ ३० छां छायायैनमः ॥६॥ ३० शं शक्त्यैनमः ॥७॥ ३० तृं तृष्णायैनमः ॥८॥ ३० क्षां क्षान्त्यैनमः ॥९॥ ३० जां जात्यैनमः ॥१०॥ ३० लंलज्जायै-

नमः ॥११॥ ॐ शां शान्त्यैनमः ॥१२॥ ॐ श्रं श्रद्धायै-
नमः ॥१३॥ ॐ कां कान्त्यैनमः ॥१४॥ ॐ लं लक्ष्म्यैनमः
॥१५॥ ॐ धूं धृत्यैनमः ॥१६॥ ॐ स्मूं स्मृत्यैनमः ॥१७॥
ॐ वृं वृत्यैनमः ॥१८॥ ॐ तुं तुष्ट्यैनमः ॥१९॥ ॐ पुं
पुष्ट्यैनमः ॥२०॥ ॐ दं दयायैनमः ॥२१॥ ॐ मां मात्रे-
नमः ॥२२॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यैनमः ॥२३॥ ॐ चि चित्यैनमः
॥२४॥

१०—ततश्चतुर्विशतिदलेभ्योवाह्ये-

लं इन्द्रायनमः ॥१॥ रं अग्नयेनमः ॥२॥ मं यमायनमः
॥३॥ क्षं नित्रहृत्येनमः ॥४॥ वं वरुणायनमः ॥५॥ यंवायवे-
नमः ॥६॥ संसोमायनमः ॥७॥ ईं ईशानायनमः ॥८॥ ईशान-
पूर्वयोर्मध्ये-अं ब्राह्मणेनमः ॥९॥ पश्चिमनित्रहृत्योर्मध्येह्नीं-
अनन्तायनमः ॥१०॥

१०—ततोदिक्पालायुधावाहनादि-यथा-

ॐ वं वज्रायनमः ॥१॥ ॐ शंशक्तयेनमः ॥२॥ ॐ दं
दण्डायनमः ॥३॥ ॐ खं खञ्जायनमः ॥४॥ ॐ पाँ पाशाय-
नमः ॥५॥ ॐ अं अंकुशायनमः ॥६॥ ॐ गंगदायैनमः ॥७॥
ॐ शं त्रिशूलायनमः ॥८॥ ॐ पं पद्मायनमः ॥९॥ ॐ चं
चक्रायनमः ॥१०॥

४—ततोभूपुरवाह्ये चतुष्कोणेषु—ऐशान्याम्-

गं गणपतयेनमः ॥१॥ आग्नेयाम्-क्षं क्षेत्रपालायनमः ॥२॥

नैऋत्याम्-वं वटुकायनमः ॥३॥ वायव्ये—यों योगिनोभ्यो
नमः ॥४॥

॥ इतिपूर्वोक्तप्रकारेणसर्वान्देवानावाह्यपूजयेत् ॥

यन्त्रपूजन सङ्केत

यन्त्र में लिखे अङ्कुशासार देवताओं का आवाहनादि पूजनविधान
विवित् कर के यन्त्र पर घट स्थान आदि कार्यक्रम करे। पश्चात् श्री दुर्गदिवी
की मूर्ति स्वर्ण आदि किसी भी धातु की हो उसमें प्राणप्रतिष्ठापर्यन्त सभी
संस्कार करके पोडशोपचार पूजन करे। अथवा चित्ररख करके पूजनादि करके
भी तन्त्रमयी अर्थात् बीजमयी श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशतीका पाठ करे। पाठारम्भ
से पूर्व तन्त्ररूप-रात्रि सूक्त का पाठ-पश्चात् मवार्णमन्त्रजय न्यासदि सहित तथा
सप्तशती का भी न्यासन्ध्यान आवम्यक है।

३९
३८

॥ तन्त्ररूपं रात्रिसूक्तम् ॥ ७ ॥

ॐ एं ब्लूं नमः ॥ १ ॥ ॐ एं ठांनमः ॥ २ ॥ ॐ एं ह्लौं
नमः ॥ ३ ॥ ॐ एं लांनमः ॥ ४ ॥ ॐ एं स्लूं नमः ॥ ५ ॥
ॐ एं कैनमः ॥ ६ ॥ ॐ एं त्रां नमः ॥ ७ ॥ ॐ एं फ्रां नमः
॥ ८ ॥ ॐ एं जींनमः ॥ ९ ॥ ॐ एं लूं नमः ॥ १० ॥
ॐ एं स्लूं नमः ॥ ११ ॥ ॐ एं नों नमः ॥ १२ ॥ ॐ एं
स्त्रीं नमः ॥ १३ ॥ ॐ एं प्रूंनमः ॥ १४ ॥ ॐ एं सूं नमः
॥ १५ ॥ ॐ एं जां नमः ॥ १६ ॥ ॐ एं वौं नमः ॥ १७ ॥
ॐ एं ओं नमः ॥ १८ ॥

मित्रानीति ॥ अथ नवार्ण विधि ॥

इस प्रकार तन्त्र रूप में परिणत रात्रिसूक्त का पाठ करने के पश्चात् निम्नाङ्कित रूप से नवार्णमन्त्र के विनियोग न्यास और ध्यान करे ॥

श्रीगणपतिर्जयति । ॐ नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राकृष्णः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्योदेवता, ऐं बीजम्, ह्रींशक्तिः, कलींकीलकम्, श्रौमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यथेंजपे विनियोगः । पूर्वोक्त पढ़कर जल गिरावे ।

निम्नलिखित न्यास बाक्यों से एक एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः शिर-मुख-हृदय गुदा-दोनों चरण और नाभि इस अङ्गों का स्पर्श करे ।

॥ ऋष्यादिन्यासः ॥

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्योनमः, हृदि । ऐं बीजायनमः गृह्णे । ह्रींशक्तयेनमः, पादयोः । कलींकीलकाय नमः, नाभौ । ॐ ऐं ह्रीं कलीं चामुण्डायैविच्चे, इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्सास करे ।

॥ करन्यासः ॥

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगुलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापत) किया जाता है । इसी प्रकार अङ्गार्ण्यास में

हृदयादि अङ्गों में मन्त्रों की स्थापना होती है । मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान् लानकर उन उन अङ्गों का नाम लेकर उन मन्त्रमय देवताओं का ही स्पर्श और बन्दत किया जाता है । ऐसा करने से पाठ या जप करने वाला स्वयं मन्त्रमय होकर मन्त्र देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है । उसके बाहर भीतर की शुद्धि होती है । दिव्यवल प्राप्त होता है । और साधना निर्विघ्नता पूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है ।

ॐ ऐं अङ्गुष्टाभ्यान्नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श)

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यान्नमः (दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ कलीं मध्यमाभ्यान्नमः (अँगूठों से मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यान्नमः (अनामिका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ बिच्चे कनिष्ठिकाभ्यान्नमः (कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं कलीं चासुण्डायै बिच्चे करतल करपृष्ठाभ्यान्नमः (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श)

॥ हृदयादिन्यासः ॥

इसमें दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से हृदय आदि अङ्गों का स्पर्श किया जाता है ।

ॐ एं हृदयायनमः (दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों
से हृदय का स्पर्श)

ॐ ह्रीं शिरसेस्वाहा (सिर का स्पर्श)

ॐ क्लीं शिखायैवषट् (शिखा का रूपर्श)

ॐ चामुण्डायै कवचायहुम् (दाहिने हाथ की अँगुलियों
से बांये कंधे का और बांये हाथ को अँगु-
लियों से दाहिने कंधे का साथ ही स्पर्श)

ॐ बिच्चे नेत्रत्रयायवौषट् (दाहिने हाथ की अँगुलियों
के अग्र भाग से दोनों नेत्रों और ललाट
के मध्य भाग का स्पर्श)

ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे अस्त्रायफट् (यह
वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के
ऊपर से वांयी ओर से पीछे की ओर
ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की
ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा
अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर
ताल बजावे ।

॥ अक्षरन्यासः ॥

निम्नाङ्कित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की
अँगुलियों से स्पर्श करे ।

ॐ एं नमः शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे । ॐ
क्लीं नमः नामनेत्रे । ॐ चां नमः दक्षिण कर्णे । ॐ मुं नमः
वामकर्णे । ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे । ॐ यैं नमः वामना-
सापुटे विनमः मुखे । ॐ च्चे नमः गुह्ये ।

इस प्रकार न्यास करके ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, इस मन्त्र से
आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा) सिर से लेकर पैर तक के सब अङ्गों
का स्पर्श करे । बाद में प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुय न्यास करे ।

॥ दिङ्न्यासः ॥

ॐ एं प्राच्यैनमः । ॐ एं आग्नेयैनमः दक्षि ॐ ह्रीं
दक्षिणायै नमः । ॐ ह्रीं नैर्कृत्यैनमः । ॐ क्लीं प्रतीञ्च्यैनमः ।
ॐ क्लीं वायव्यैनमः । ॐ चामुण्डायै उदीच्यैनमः । ॐ चामु-
ण्डायै ऐशान्यैनमः । ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे
ऊर्ध्वायैनमः । ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चेभूम्यैनमः

॥ ध्यानम् ॥

खङ्गज्ञापगदेषु चापपरिखाङ्घूलम्भुशुण्डीं शिरः
शङ्खंसंधतीङ्गरैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाशमद्युतिमास्यपाददशकां सेवैमहाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौकमलजो हन्तुम्मधुङ्गैटभम् ॥ १ ॥
अक्षस्त्रक्परशुङ्गदेषुकुलिशं पद्मन्धनुःकुण्डिकां
दण्डंशक्तिमसिङ्गचर्चर्मजलजंघण्टांसुराभाजनम् ।

शूलं पाशसु दर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमदिनी मिह महालक्ष्मीं सरोजस्तिम् ॥ २ ॥
घण्टा शूलहलानिशङ्खमुसले चक्रधनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीङ्गू घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरी देहसमुद्ध्रवां त्रिजगतामाधारभूताम्महा,
पूर्वामित्रसरस्वतीमनुभजे शुभादित्यादिनीम ॥ ३ ॥
पश्चात्—एं हीं अक्षमालिकायैनमः, इस मन्त्र से माला
की पूजा करके प्रार्थना करे ।

ॐ मां मालेमहामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ॥ १ ॥
ॐ अविन्धं कुरुमाले त्वं गृह्णामिदक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्धथर्थं प्रसीदममसिद्धये ॥ २ ॥
इसके पश्चात्—“ॐ एं हीं कलीं चामुण्डायै विच्चे”
इस मन्त्र का १०८ बार जप करे ।

पश्चात्—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतञ्जयम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रसादान् महेश्यरि ॥
इस श्लोक को पढ़कर देवी के बाम हस्त में जपनिवेदन करे ।

॥ इतिनवार्णविधि: ॥

नवार्ण विधि के अनुसार जप करने के बाद सप्तशती के विनियोग न्थास
और ध्यान करने चाहिये । पूर्वाङ्गित क्रमानुसार न्यासादि करे ।

प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्राकृषयः,
श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्योदैवताः, गायत्र्युच्छिण-
गनुष्टुभश्छन्दासिनन्दांशाकम्भरीभीमः शक्तयः, रक्तदन्ति-
का दुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अरिनवायुसूर्यास्तत्वानि, कृग्रयजुः
सामवेदाध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहा-
लक्ष्मीमहासरस्वती प्रात्यर्थेजपे विनियोग :

खङ्गनोंशूलिनीघोरागदिनी चक्रिणीतथा ।

शङ्खिनी चापिनी वाणुभुशुण्डी परिघायुधा ॥

ॐ एं स्लूं नमः अङ्गष्ठाभ्यान्नमः ।

ॐ शूलनपाहि नो देविपाहिखड्गेनचाम्बिके ।

घण्टा स्वनेननः पाहिचापज्यानिस्वनेनच ॥

ॐ एं फेनमः । (तर्जनीभ्यान्नमः ।

प्राच्यां रक्षप्रतीच्याङ्गच चण्डिकेरक्षदक्षिणे ।

ब्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥

ॐ एं क्रीं नमः । मध्यमाभ्यान्नमः ।

ॐ सौम्यानियानिरूपाणि त्रैलोक्येविचरन्ति ते ।

यानि चात्यर्थघोराणितैरक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥

ॐ एं म्लूं नमः । अनामिकाभ्यान्नमः ।

ॐ खङ्गशूलगदादीनि यानिचास्त्राणितेऽम्बिके ।

करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।

ॐ एं ब्रैं नमः । कनिष्ठिकाभ्यान्नमः ।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशो सर्वशक्तिसमन्विते ।
 भयेभ्यस्त्राहि नोदेवि दुर्गं देविनमोस्तुते ॥

ॐ एं श्रूं नमः । करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ॥

ॐ ऐंस्लन्नमः खञ्जिनी शूलिनी धोरा०-हृदयायनमः ।

ॐ एं फैनमः ।—शूलेनपाहिनोदेवि०-शिरसेस्वाहा ।

ॐ एं क्रीं नमः प्राच्यांरक्षप्रतीच्यांच शिखायैवषट् ।

ॐ ऐंम्लूं नमः । सौम्यानियामिरूपाणि०-कवचायहुम् ।

ॐ एं व्रेनमः । खञ्जशूलगदादीनि०-नेत्रत्रयायवौषट् ।

ॐ एं श्रूं नमः । सर्वस्वरूपेसर्वेशो०-अस्त्रायफटू

॥ ध्यानम् ॥

विद्युदामसमप्रभाम्भूगपतिस्कन्धस्थिताम्भीषणां
 कन्याभिःकरवालखेटविलसद्वस्ताभिरासेविताम् ।
 हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापंगुणंतर्जनीं
 विभ्राणामनलात्मिकांशशिधरान् दुर्गान्त्रिनेत्राम्भजे ॥

अर्थ— जिनके अंगों की शोभा बिजली के समान हैं, सिंह की सवारी पर बैठी हुई भयद्वार प्रतीत होती हैं, हाथों में तलवार और ढाल लिये ऐसी अनेक कन्यायें जिनकी सेवा में खड़ी हैं, जो अपने हाथों में चक्र-गदा-तलवार-ढाल-वाण-धनुष, पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हैं जिनका स्वरूप अग्निमय है, जो वपने माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण किये, उन तीन नेत्रवाली दुर्गा का मैं भजन करता हूँ । इस प्रकार भगवती दुर्गा देवी का ध्यान करके श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ करै ।

सङ्केत-कामनानुसार मन्त्र बीज जपने से सकल कामनाप्रद निश्चित हैं । एवमेव-सर्वत्र अति प्रचलित दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुष्टित करने से शीघ्र सिद्ध प्रद होते हैं ।

॥ अर्थश्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीपाठारम्भः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथ प्रथमोध्यायः ॥

एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे । १०८ । ओं बीजत्रयायै-
 विद्महे तत्प्रधानायैधीमहि । तत्रः शक्तिः प्राचोदयात् ।

ॐ श्रीं नमः १ । ॐ एं ह्रीं नमः २ । ॐ एं क्लीं
 नमः ३ । ॐ एं श्रीं नमः ४ । ॐ एं प्रीं नमः ५ । ॐ एं
 ह्रीं नमः ६ । ॐ एं ह्रीं नमः ७ । ॐ एं सौं नमः ८ । ॐ
 एं प्रें नमः ९ । ॐ एं श्रीं नमः १० । एं ह्‌लीं
 नमः ११ । ॐ एं म्लीं नमः १२ । ॐ एं स्त्रीं नमः १३ ।
 ॐ एं क्रीं नमः १४ । ॐ एं ह्‌स्लीं नमः १५ । ॐ एं क्रीं
 नमः १६ । ॐ एं चां नमः १७ । ॐ में नमः १८ ।
 ॐ एं क्रीं नमः १९ । ॐ एं वैं नमः २० । ॐ एं ह्रीं
 नमः २१ । ॐ एं युं नमः २२ । ॐ एं जुं नमः २३ ।
 ॐ एं हं मनः २४ । ॐ एं शं नमः २५ । ॐ एं रौं
 नमः २६ । ॐ एं यं नमः २७ । ॐ एं वि नमः २८ ।
 ॐ एं वैं नमः २९ । ॐ एं चं नमः ३० । ॐ एं ह्रीं

नमः ३१ । ॐ एं क्रं नमः ३२ । ॐ एं सं नमः । ३३ ॐ
एं कं नमः ३४ । ॐ एं श्रीं नमः ३५ । ॐ एं त्रौं नमः ३६ ।
ॐ एं स्त्रां नमः ३७ । ॐ एं ज्यैं नमः ३८ । ॐ एं रौं
नमः ३९ । ॐ एं द्रां नमः । ॐ एं द्रों नमः ४१ ।
ॐ एं हां नमः ४२ । ॐ एं द्रूं नमः ४३ । ॐ एं शां
नमः ४४ । ॐ एं मीं नमः ४५ । ॐ एं श्रौं नमः ४६ ।
ॐ एं जुं नमः ४७ । ॐ एं हलरूं नमः ४८ । ॐ एं श्रूं
नमः ४९ । ॐ एं प्रीं नमः ५० । ॐ एं रं नमः ५१ ।
ॐ एं वं नमः ५२ । ॐ एं ब्रीं नमः ५३ । ॐ एं ब्लं
नमः ५४ । ॐ एं स्त्रौं नमः ५५ । ॐ एं ल्वां नमः ५६ ।
ॐ एं लूं नमः ५७ । ॐ एं सां नमः ५८ । ॐ एं रौं
नमः ५९ । ॐ एं स्हौं नमः ६० । ॐ एं कुं नमः ६१ ।
ॐ एं शौं नमः ६२ । ॐ एं श्रौं नमः ६३ । ॐ एं वं
नमः ६४ । ॐ एं त्रूं नमः ६५ । ॐ एं क्रौं नमः ६६ ।
ॐ एं क्लं नमः ६७ । ॐ एं क्लीं नमः ६८ । ॐ एं श्रीं
नमः ६९ । ॐ एं ब्लूं नमः ७० । ॐ एं ठां नमः ७१ ।
ॐ एं ह्रीं नमः ७२ । ॐ एं सां नमः ७३ । ॐ एं स्लूं
नमः ७४ । ॐ एं क्रैं नमः ७५ । ॐ एं त्रां नमः ७६ ।
ॐ एं फां नमः ७७ । ॐ एं जीं नमः ७८ । ॐ एं लूं
नमः ७९ । ॐ एं स्लूं नमः ८० । ॐ एं तों नमः ८१ ।
ॐ एं स्त्रीं नमः ८२ । ॐ एं प्रूं नमः ८३ । सूं नमः ८४ ।

ॐ एं ज्ञां नमः ८५ । ॐ एं वौं नमः ८६ । ॐ एं ओं
नमः ८७ । ॐ एं श्रौं नमः ८८ । ॐ एं क्रूं नमः ८९ ।
ॐ एं रूं नमः ९० । ॐ एं क्लीं नमः ९१ । ॐ एं दुं
नमः ९२ । ॐ एं ह्रीं नमः ९३ । ॐ एं गूं नमः ९४ ।
ॐ एं लां नमः ९५ । ॐ एं ह्रां नमः ९६ । ॐ एं गं नमः ९७ ।
ॐ एं एं नमः ९८ । ॐ एं श्रौं नमः ९९ । ॐ जूं नमः १०० ।
ॐ एं डं नमः १०१ । ॐ एं श्रौं नमः १०२ । ॐ छां
नमः १०३ । ॐ एं क्लीं नमः १०४ ।

॥ इति प्रथमोध्यायः ॥

॥ अथ द्वितीयोध्यायः ॥

ॐ एं श्रौं नमः १ । एं श्रीं नमः २ । ॐ एं ह् सूं
नमः ३ । एं ह्रौं नमः ४ । ॐ एं ह्रीं नमः ५ । ॐ एं
अं नमः ६ । ॐ एं क्लीं नमः ७ । ॐ एं चां नमः ८ ।
ॐ एं मुं नमः ९ । ॐ एं डां नमः १० । ॐ एं यैं नमः ११ ।
ॐ एं वि नमः १२ । ॐ एं चर्चे नमः १३ । ॐ एं ईं
नमः १४ । एं सौं नमः १५ । ॐ एं द्रां नमः १६ । ॐ एं
त्रौं नमः १७ । ॐ एं लूं नमः १८ । ॐ एं वं नमः १९ ।
ॐ एं ह्रां नमः २० । ॐ एं क्रीं नमः २१ । ॐ एं सौं
नमः २२ । ॐ एं यं नमः २३ । ॐ एं एं नमः २४ । ॐ

ऐं मूँ नमः २५ । अँ ऐं सः नमः २६ । अँ ऐं हँ नमः २७ ।
 अँ ऐं सं नमः २८ । अँ ऐं सों नमः २९ । अँ ऐं शं नमः ३० । अँ ऐं हं नमः ३१ । अँ ऐं ह्लौं नमः ३२ ।
 अँ ऐं म्लीं नमः ३३ । अँ यूं नमः ३४ । अँ ऐं त्रूं नमः । अँ ऐं स्रीं नमः ३६ । अँ ऐं आं नमः ३७ ।
 अँ ऐं प्रें नमः ३८ । अँ ऐं शं नमः ३९ । अँ ऐं ह्लां नमः ४० । अँ ऐं स्मूं नमः ४१ । अँ ऐं ऊं नमः ४२ ।
 अँ ऐं गूं नमः ४३ । अँ ऐं व्यं नमः ४४ । अँ ऐं हूं नमः ४५ । अँ ऐं भैं ममः ४६ । अँ ऐं ह्लां नमः ४७ ।
 अँ कूं नमः ४८ । अँ ऐं मूं नमः ४९ । अँ ऐं लरीं नमः । अँ ऐं थ्रां नमः ५१ । अँ ऐं द्रूं नमः ५२ । अँ ऐं ह्लूं नमः ५३ ।
 अँ ऐं ह्लौं सौं नमः ५४ । अँ ऐं क्रां नमः ५५ । अँ ऐं स्हौं नमः ५६ । अँ ऐं म्लूं नमः ५७ । अँ ऐं श्रीं नमः ५८ ।
 अँ ऐं गैं नमः ५९ । अँ ऐं क्रीं नमः ६० । अँ ऐं त्रीं नमः ६१ । अँ ऐं क्सीं नमा : ६२ । अँ ऐं फ्रों नमः ६३ ।
 अँ ऐं फैं नमः ६४ । अँ ऐं ह्लीं नमः ६५ । अँ ऐं क्ष्मीं नमः ६६ । अँ ऐं क्ष्मींनमः ६७ । अँ ऐं रौं नमः ६८ ।
 अँ ऐं डुं नमः ६९ ।

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥



॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

अँ ऐं श्रौं नमः १ । अँ ऐं क्लीं नमः २ । अँ ऐं सां नमः ३ । अँ ऐं त्रों नमः ४ । अँ ऐं प्रूं नमः ५ । अँ ऐं ग्लौं नमः ६ । अँ ऐं क्रौं नमः ७ । अँ ऐं व्रीं नमः ८ । अँ ऐं स्लीं नमः ९ । अँ ऐं ह्लीं नमः १० । अँ ऐं ह्लौं नमः ११ ।
 अँ ऐं श्रां नमः १२ । अँ ऐं ग्रीं नमः १३ । ऊँ ऐं क्रूं नमः १४ । अँ ऐं क्रीं नमः १५ । अँ ऐं यां नमः १६ ।
 अँ ऐं द्वलूं नमः १७ । अँ ऐं द्रूं नमः १८ । अँ ऐं क्षं नमः १९ । अँ ऐं ओं नमः २० । अँ ऐं क्रौं समः २१ ।
 अँ ऐं क्ष्मक्लरीं नमः २२ । अँ ऐं वां नमः २३ । अँ ऐं श्रूं नमः २४ । अँ ऐं ग्लूं नमः २५ । अँ ऐं लरीं नमः २६ ।
 अँ ऐं प्रें नमः २७ । अँ ऐं हूं नमः २८ । अँ ऐं ह्लौं नमः २९ । अँ ऐं दें नमः ३० । अँ ऐं न्तूं नमः ३१ । अँ ऐं आं नमः ३२ ।
 अँ ऐं फ्रां नमः ३३ । अँ ऐं प्रीं नमः ३४ । अँ ऐं दं नमः ३५ । अँ ऐं फीं नमः ३६ । अँ ऐं ह्लीं नमः ३७ ।
 अँ ऐं गूं नमः ३८ । अँ ऐं श्रौं नमः ३९ । अँ ऐं साँ नमः ४० । अँ ऐं श्रीं नमः ४१ । अँ ऐं जुं नमः ४२ ।
 अँ ऐं हं नमः ४३ । अँ ऐं सं नमः ४४ ।

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

ॐ एं श्रौं नमः १ । ॐ एं सौं नमः २ । ॐ एं दीं नमः ३ । ॐ एं प्रें नमः ४ । ॐ एं यां नमः ५ । ॐ एं रुं नमः ६ । ॐ एं मं नमः ७ । ॐ एं सूं नमः ८ । ॐ एं श्रां नमः ९ । ॐ एं औं नमः १० । ॐ एं लूं नमः ११ । ॐ एं डूं नमः १२ । ॐ एं जूं नमः १३ । ॐ एं धूं नमः १४ । ॐ एं त्रे नमः १५ । ॐ एं ह्लीं नमः १६ । ॐ एं श्रीं नमः १७ । ॐ एं ईं नमः १८ । ॐ एं हां नमः १९ । ॐ एं हूलूं नमः २० । ॐ एं क्लूं नमः २१ । ॐ एं क्रां नमः २२ । ॐ एं ल्लूं नमः २३ । ॐ एं फ्रे नमः २४ । ॐ एं क्रीं नमः २५ । ॐ एं म्लूं मनः २६ । ॐ एं व्रे नमः २७ । ॐ एं श्रौं नमः २८ । ॐ एं हाँ नमः २९ । ॐ एं व्रीं नमः ३० । ॐ एं ह्लीं नमः ३१ । ॐ एं त्रों नमः ३२ । ॐ एं हूलौं नमः ३३ । ॐ एं गीं नमः ३४ । ॐ एं यूं नमः ३५ । ॐ एं ह्लीं नमः ३६ । ॐ एं ह्लूं नमः ३७ । ॐ एं श्रौं नमः ३८ । ॐ एं ओं नमः ३९ । ॐ एं अं नमः ४० । ॐ एं म्हौं नमः ४१ । ॐ एं प्रीं नमः ४२ ।

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

→४३३४४←

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

ॐ एं श्रौं नमः १ । ॐ एं प्रीं नमः २ । ॐ एं ओं नमः ३ । ॐ एं ह्लीं नमः ४ । ॐ एं ल्लीं नमः ५ । ॐ एं ॐ एं त्रों नमः ६ । ॐ एं क्रीं नमः ७ । ॐ एं हूसौं नमः ८ । ॐ एं ह्लीं नमः ९ । ॐ एं श्रीं नमः १० । ॐ एं हूं नमः ११ । ॐ एं क्लीं नमः १२ । ॐ एं रौं नमः १३ । ॐ एं स्त्रीं नमः १४ । ॐ एं म्लीं नमः १५ । ॐ एं प्लूं नमः १६ । ॐ एं स्हौं नमः १७ । ॐ एं स्वीं नमः १८ । ॐ एं ग्लूं नमः १९ । ॐ एं व्रीं नमः २० । ॐ एं सौं नमः २१ । ॐ एं ल्लूं नमः २२ । ॐ एं ल्लूं नमः २३ । ॐ एं द्रां नमः २४ । ॐ एं क्सां नमः २५ । ॐ एं क्ष्मीं नमः २६ । ॐ एं ग्लौं नमः २७ । ॐ एं स्कं नमः २८ । ॐ एं व्रूं नमः २९ । ॐ एं स्क्लूं नमः ३० । ॐ एं कौं नमः ३१ । ॐ एं छ्रीं नमः ३२ । ॐ एं म्लूं नमः ३३ । ॐ एं क्लूं नमः ३४ । ॐ एं शां नमः ३५ । ॐ एं ह्लीं नमः ३६ । ॐ एं स्त्रूं नमः ३७ । ॐ एं ल्लीं नमः ३८ । ॐ एं लीं नमः ३९ । ॐ एं सं नमः ४० । ॐ एं लूं नमः ४१ । ॐ एं ह्लूं नमः ४२ । ॐ एं श्वूं नमः ४३ । ॐ एं जूं नमः ४४ । ॐ एं हूस्लीं नमः ४५ । ॐ एं स्की नमः ४६ । ॐ एं क्लां नमः ४७ । ॐ एं श्रूं नमः ४८ । ॐ एं हं नमः ४९ । ॐ एं ह्लीं नमः ५० । ॐ एं क्सूं नमः

५१। ॐ एँ द्रौं नमः ५२। ॐ एँ क्लूं नमः ५३। ॐ एँ
गां नमः ५४। ॐ एँ सं नमः ५५। ॐ एँ ल्स्वा नमः ५६।
ॐ एँ फीं नमः ५७। ॐ एँ स्लां नमः ५८। ॐ एँ ल्लूं
नमः ५९। ॐ एँ फें नमः ६०। ॐ एँ ओं नमः ६१। ॐ एँ
स्मलीं नमः ६२। ॐ एँ हां नमः ६३। ॐ एँ ॐ नमः
६४। ॐ एँ ह्लूं नमः ६५। ॐ एँ हूँ नमः ६६। ॐ एँ नं
नमः ६७। ॐ एँ सां नमः ६८। ॐ एँ वं नमः ६९।
ॐ एँ मं नमः ७०। ॐ एँ म्वलीं नमः ७१। ॐ एँ शां
नमः ७२। ॐ एँ लं नमः ७३। ॐ एँ भैं नमः ७४।
ॐ एँ ल्लूं नमः ७५। ॐ एँ हौं नमः ७६। ॐ एँ ई नमः
७७। ॐ एँ चें नमः ७८। ॐ एँ ल्क्रीं नमः ७९। ॐ एँ ह्लरीं
नमः ८०। ॐ एँ क्ष्मरीं नमः ८१। ॐ एँ पूं नमः ८२।
ॐ एँ श्रौं नमः ८३। ॐ एँ हौं नमः ८४। ॐ एँ भ्रूं
नमः ८५। ॐ एँ क्स्त्रीं नमः ८६। ॐ एँ आं नमः ८७।
ॐ एँ क्रूं नमः ८८। ॐ एँ त्रूं नमः ८९। ॐ एँ डुं
नमः ९०। ॐ एँ जां नमः ९१। ॐ एँ ह्लरूं नमः ९२।
ॐ एँ फौं नमः ९३। ॐ एँ क्रौं नमः ९४। ॐ एँ किं
नमः ९५। ॐ एँ ग्लूं तमः ९६। ॐ छ् क्लीं नमः ९७।
ॐ एँ रं नमः ९८। ॐ एँ क्सैं नमः ९९। ॐ एँ स्हुं
नमः १००। ॐ एँ श्रौं नमः १०१। ॐ एँ श्रीं नमः १०२।
ॐ एँ ओं नमः १०३। ॐ एँ लूं नमः १०४। ॐ एँ ल्हं

नमः १०५। ॐ एँ ल्लूं नमः १०६। ॐ एँ स्क्रीं नमः १०७।
ॐ एँ स्वौं नमः १०८। ॐ एँ स्ख्रूं नमः १०९। ॐ एँ
क्ष्मलीं नमः ११०। ॐ एँ ब्रीं नमः १११। ॐ एँ सीं
नमः ११२। ॐ एँ भूं नमः ११३। ॐ एँ लां नमः ११४।
ॐ एँ श्रौं नमः ११५। ॐ एँ स्हैं नमः ११६। ॐ एँ हौं
नमः ११७। ॐ एँ श्रीं नमः ११८। ॐ एँ फें नमः ११९।
ॐ एँ रूं नमः १२०। ॐ एँ च्छूं नमः १२१। ॐ एँ ल्हं
नमः १२२। ॐ एँ कं नमः १२३। ॐ एँ द्रैं नमः १२४।
ॐ एँ श्रीं नमः १२५। ॐ एँ सां नमः १२६। ॐ एँ हौं
नमः १२७। ॐ एँ एं नमः १२८। ॐ एँ स्क्लीं नमः १२९।

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

ॐ एँ श्रौं नमः १। ॐ एँ ओं नमः २। ॐ एँ त्रूं
नमः ३। ॐ एँ हौं नमः ४। ॐ एँ क्रौं नमः ५। ॐ एँ
हौं नमः ६। ॐ एँ त्रीं नमः ७। ॐ एँ क्लीं नमः ८।
ॐ एँ प्रीं नमः ९। ॐ एँ हौं नमः १०। ॐ एँ हौं
नमः ११। ॐ एँ श्रौं नमः १२। ॐ एँ एं नमः १३। ॐ
एँ ओं नमः १४। ॐ एँ श्रीं नमः १५। ॐ एँ क्रां नमः १६।
ॐ एँ हूं नमः १७। ॐ एँ छ्रां नमः १८। ॐ एँ क्ष्मक्लीं

नमः १९ । ॐ एं ल्लूं नमः २० । ॐ एं सौं नमः २१ ।
ॐ एं ह्लौं नमः २२ । ॐ एं कूं नमः २३ । ॐ एं सौं
नमः २४ ।

॥ इति पष्ठोऽध्यायः ॥

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

ॐ एं श्रौं नमः १ । ॐ एं कूं नमः २ । ॐ एं ह्लौं नमः ३ ।
ॐ एं हं नमः ४ । ॐ एं मूं नमः ५ । ॐ एं त्रौं नमः ६ ।
ॐ एं हौं नमः ७ । ॐ एं ओं नमः ८ । ॐ एं हसूं
नमः ९ । ॐ एं क्लूं नमः १० । ॐ एं क्रैं नमः ११ ।
ॐ एं नैं नमः १२ । ॐ एं लूं नमः १३ । ॐ एं हस्लीं
नमः १४ । ॐ एं प्लूं नमः १५ । ॐ एं शां नमः १६ ।
ॐ एं स्लूं नमः १७ । ॐ एं प्लौं नमः १८ । ॐ एं प्रे
नमः १९ । ॐ एं अं नमः २० । ॐ एं औं नमः २१ ।
ॐ एं म्लरीं नमः २२ । ॐ एं श्रां नमः २३ । ॐ एं सौं
नमः २४ । ॐ एं श्रौं नमः २५ । ॐ एं प्रीं नमः २६ ।
ॐ एं हस्त्रीं नमः २७ ।

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥



॥ अथाष्टमोऽध्यायः ॥

ॐ एं श्रौं नमः १ । ॐ एं म्हलरीं नमः २ । ॐ एं प्रूं
नमः ३ । ॐ एं एं नमः ४ । ॐ एं क्रौं नमः ५ । ॐ एं
ईं नमः ६ । ॐ एं एं नमः ७ । ॐ एं लरीं नमः ८ । ॐ एं
फौं नमः ९ । ॐ एं म्लूं नमः १० । ॐ एं नौं नमः ११ ।
ॐ एं हूं नमः १२ । ॐ एं फौं मनः १३ । ॐ एं ग्लौं
नमः १४ । ॐ एं स्मौं नमः १५ । ॐ एं सौं नमः १६ ।
ॐ एं श्रीं नमः १७ । ॐ एं स्हौं नमः १८ । ॐ एं ख्सें
नमः १९ । ॐ एं क्ष्मलीं नमः २० । ॐ एं ह्वां नमः २१ ।
ॐ एं वीं नमः २२ । ॐ एं लूं नमः २३ । ॐ एं लसीं
नमः २४ । ॐ एं ब्लौं नमः २५ । ॐ एं त्सौं नमः २६ ।
ॐ एं व्रूं नमः २७ । ॐ एं श्लकी नमः २८ । ॐ एं श्रैं
नमः २९ । ॐ एं ह्रीं नमः ३० । ॐ एं श्रीं नमः ३१ ।
ॐ एं क्लीं नमः ३२ । ॐ एं क्लौं नमः ३३ । ॐ एं तौं
नमः ३४ । ॐ एं हूं नमः ३५ । ॐ एं क्लूं नमः ३६ ।
ॐ एं र्ता नमः ३७ । ॐ एं म्लूं नमः ३८ । ॐ एं हं
नमः ३९ । ॐ एं स्लूं नमः ४० । ॐ एं औं नमः ४१ ।
ॐ एं ल्हों नमः ४२ । ॐ एं श्लरीं नमः ४३ । ॐ एं यां
नमः ४४ । ॐ एं थ्लीं नमः ४५ । ॐ एं ल्हों नमः ४६ ।
ॐ एं ग्लौं नमः ४७ । ॐ एं ह्लौं नमः ४८ । ॐ एं प्राँ
नमः ४९ । ॐ एं क्रौं नमः ५० । ॐ एं क्लौं नमः ५१ ।

ॐ एँ न्त्लुं नमः ५२ । ॐ एँ हीं नमः ५३ । ॐ एँ ह्लौं
नमः ५४ । ॐ एँ हैं नमः ५५ । ॐ एँ भ्रं नमः ५६ ।
ॐ एँ सौं नमः ५७ । ॐ एँ श्रीं नमः ५८ । ॐ एँ प्सूं
नमः ५९ । ॐ एँ द्रौं नमः ६० । ॐ एँ स्वां नमः ६१ ।
ॐ एँ हस्लीं समः ६२ । ॐ एँ स्लरीं नमः ६३ ।

॥ इत्यष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

ॐ एँ रौं नमः १ । ॐ एँ क्लीं नमः २ । ॐ एँ म्लौं
नमः ३ । ॐ एँ श्रौं नमः ४ । ॐ एँ ग्लीं नमः ५ । ॐ एँ
हौं नमः ६ । ॐ एँ हसौं नमः ७ । ॐ एँ ईं नमः ८ ।
ॐ एँ व्रूं नमः ९ । ॐ एँ श्रां नमः १० । ॐ एँ लूं
नमः ११ । ॐ एँ आं नमः १२ । ॐ एँ श्रीं नमः १३ ।
ॐ एँ क्रौं नमः १४ । ॐ एँ प्रूं नमः १५ । ॐ एँ क्लीं
नमः १६ । ॐ एँ भ्रूं नमः १७ । ॐ एँ हौं नमः १८ ।
ॐ एँ क्रीं नमः १९ । ॐ एँ म्लीं नमः २० । ॐ एँ ग्लौं
नमः २१ । ॐ एँ हसूं नमः २२ । ॐ एँ ल्पीं नमः २३ ।
ॐ एँ हौं नमः २४ । ॐ एँ हस्वां नमः २५ । ॐ एँ
स्हौं नमः २६ । ॐ एँ ल्लूं नमः २७ । ॐ एँ क्स्लीं
नमः २८ । ॐ एँ श्रीं नमः २९ । ॐ एँ स्त्रूं नमः ३० ।

ॐ एँ चूं नमः ३१ । ॐ एँ वीं नमः ३२ । ॐ क्लूं
नमः ३३ । ॐ एँ श्लूं नमः ३४ । ॐ एँ कूं तमः ३५ । ॐ
एँ क्रां नमः ३६ । ॐ एँ ह्लौं नमः ३७ । ॐ एँ क्रां नमः
३८ । ॐ एँ स्क्लीं नमः ३९ । ॐ एँ सूं नमः ४० ।
ॐ एँ फूं नमः ४१ ।

॥ इति नवमोऽध्यायः ॥

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

ॐ एँ श्रौं नमः १ । ॐ एँ हीं नमः २ । ॐ एँ ब्लूं
नमः ३ । ॐ एँ हौं नमः ४ । ॐ एँ म्लूं नमः ५ ।
ॐ एँ श्रौं नमः ६ । ॐ एँ हीं नमः ७ । ॐ एँ ग्लीं
नमः ८ । ॐ एँ श्रौं नमः ९ । ॐ एँ ध्रूं नमः १० । ॐ एँ
हुं नमः ११ । ॐ एँ द्रौं नमः १२ । ॐ एँ श्रीं नमः १३ ।
ॐ एँ व्रूं नमः १४ । ॐ एँ व्रूं नमः १५ । ॐ एँ फे
नमः १६ । ॐ एँ हां नमः १७ । ॐ एँ जुं नमः १८ ।
ॐ एँ सौं नमः १९ । ॐ एँ स्लूं नमः २० । ॐ एँ प्रें
नमः २१ । ॐ एँ हस्वां नमः २२ । ॐ एँ प्रीं नमः २३ ।
ॐ एँ फां नमः २४ । ॐ एँ क्रीं नमः २५ । ॐ एँ श्रीं
नमः २६ । ॐ एँ क्रां नमः २७ । ॐ एँ सः नमः २८ ।
ॐ एँ क्लीं नमः २९ । ॐ एँ व्रैं नमः ३० । ॐ एँ ईं

नमः ३१ । ॐ एं ज्ञहूलरीं नमः ३२ ।

॥ इति दशमोऽध्यायः ॥

॥ अथ एकादशोऽध्यायः ॥

ॐ एं श्रीं नमः १ । ॐ एं कूं नमः २ । ॐ श्रीं
नमः ३ । ॐ एं ल्लीं नमः ४ । ॐ एं प्रें नमः ५ । ॐ एं
सौं नमः ६ । ॐ एं स्हौं नमः ७ । ॐ एं शूं नमः ८ ।
ॐ एं क्लीं नमः ९ । ॐ एं स्क्लीं नमः १० । ॐ एं प्रीं
नमः ११ । ॐ एं ग्लीं नमः १२ । ॐ एं हृस्त्रीं नमः १३ ।
ॐ एं स्तौं नमः १४ । ॐ एं लीं नमः १५ । ॐ एं म्लीं
नमः १६ । ॐ एं स्तूं नमः १७ । ॐ एं ज्ञत्रीं नमः १८ ।
ॐ एं फूं नमः १९ । ॐ एं क्रूं नमः २० । ॐ ह्रीं
नमः २१ । ॐ एं ल्लूं नमः २२ । ॐ एं क्ष्मीं नमः २३ ।
ॐ एं शूं नमः २४ । ॐ एं इं नमः २५ । ॐ एं जुं नमः
२६ । ॐ एं व्रैं नमः २७ । ॐ एं द्रूं नमः २८ । ॐ एं
हौं नमः २९ । ॐ एं क्लीं नमः ३० । ॐ एं सूं नमः
३१ । ॐ एं हौं नमः ३२ । ॐ एं श्वं नमः ३३ । ॐ एं
व्रूं नमः ३४ । ॐ एं फां नमः ३५ । ॐ एं ह्रीं नमः ३६ ।
ॐ एं लं नमः ३७ । ॐ एं हृं सौं नमः ३८ । ॐ एं सें
नमः ३९ । ॐ एं ह्रीं नमः ४० । ॐ ह्रीं नमः ४१ । ॐ एं
विं नमः ४२ । ॐ एं प्लीं नमः ४३ । ॐ एं क्ष्म्लीं नमः

४४ । ॐ एं त्वां नमः ४५ । ॐ एं प्रं नमः ४६ । ॐ एं
म्लीं नमः ४७ । ॐ एं सूं नमः ४८ । ॐ एं क्ष्मां नमः
४९ । ॐ एं स्तूं नमः ५० । ॐ एं स्त्रीं नमः ५१ । ॐ एं
थ्रीं नमः ५२ । ॐ एं क्रौं नमः ५३ । ॐ एं श्रां नमः ५९ ।
ॐ एं म्लीं नमः ५५ ।

॥ इत्येकादशोऽध्यायः ॥

॥ अथ द्वादशोऽध्यायः ॥

ॐ एं ह्रीं नमः १ । ॐ एं ओं नमः २ । ॐ एं श्रीं
नमः ३ । ॐ एं ई नमः ४ । ॐ एं क्लीं नमः ५ । ॐ एं
कूं नमः ६ । ॐ एं शूं नमः ७ । ॐ एं प्रां नमः ८ । ॐ एं
कूं नमः ९ । ॐ एं दिं नमः १० । ॐ एं फें नमः ११ ।
ॐ एं हं नमः १२ । ॐ एं सः नमः १३ । ॐ एं चें नमः
१४ । ॐ एं सूं नमः १५ । ॐ एं प्रीं नमः १६ । ॐ एं
ब्लूं नमः १७ । ॐ एं आं नमः १८ । ॐ एं औं नमः
१९ । ॐ एं ह्रीं नमः २० । ॐ एं क्रीं नमः २१ । ॐ एं
द्रां नमः २२ । ॐ एं श्रीं नमः २३ । ॐ एं स्लीं नमः
२४ । ॐ एं क्लीं नमः २५ । ॐ एं स्तूं नमः २६ । ॐ एं
ह्रीं नमः २७ । ॐ एं ब्लीं नमः २८ । ॐ एं व्रों नमः २९ ।
ॐ एं ओं नमः ३० । ॐ एं श्रौं नमः ३१ । ॐ एं एं नमः

३२ । ॐ एँ प्रें नमः ३३ । ॐ एँ दृं नमः ३४ । ॐ एँ कलुं नमः ३५ । ॐ एे औं नमः ३६ । ॐ एँ सूं नमः ३७ । ॐ एँ चं नमः ३८ । ॐ एँ हूं समः ३९ । ॐ एँ प्लीं नमः ४० । ॐ एँ क्षां नमः ४१ ।

॥ इति द्वादशोऽध्यायः ॥

॥ अथ त्रयोदशोऽध्यायः ॥

ॐ एँ श्रौं नमः १ । ॐ एँ व्रीं नमः २ । ॐ एँ ओं नमः ३ । ॐ एँ औं नमः ४ । ॐ एँ हां नमः ५ । ॐ एँ श्रीं नमः ६ । ॐ एँ श्रां नमः ७ । ॐ एँ ओं नमः ८ । ॐ एँ प्लीं नमः ९ । ॐ एँ सौं नमः १० । ॐ एँ ह्रीं नमः ११ । ॐ एँ क्रीं नमः १२ । ॐ एँ ल्लूं नमः १३ । ॐ एँ क्लीं नमः १४ । ॐ एँ ह्रीं नमः १५ । ॐ एँ प्लीं नमः १६ । ॐ एँ श्रीं नमः १७ । ॐ एँ ल्लीं नमः १८ । ॐ एँ श्रूं नमः १९ । ॐ एँ ह्रीं नमः २० । ॐ एँ व्रूं नमः २१ । ॐ एँ ह्रीं नमः २२ । ॐ एँ ह्रां नमः २३ । ॐ एँ प्रीं नमः २४ । ॐ एँ ॐ नमः २५ । ॐ एँ सूं नमः २६ । ॐ एँ ह्लौं नमः २७ । ॐ एँ ष्ठीं नमः २८ । ॐ एँ आं लक्रीं नमः २९ । ॐ एँ ओं नमः ३० ।

॥ इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥

इति तन्त्ररूपेणपरिणताश्रीतन्त्रदुर्गसिप्तशती
॥ समाप्ता ॥

इस प्रकार श्रीतन्त्रदुर्गसिप्तशती का पाठ पूरा होने पर प्रथम नवर्ण-मन्त्र का जप करके पश्चात् तान्त्रिक देवी सूक्त का पाठ करे। सभी कार्य नवर्ण मन्त्र के न्यास आदि तथा सिप्तशती न्यास आदि पाठ आरम्भ के पूर्व की तरह होंगे।

॥ विनियोगः ॥

श्री गणपतिर्जयति ॐ अस्य श्रीनवर्णमन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दान्सि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, एं वीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे विनियोगः ।

॥ क्रष्णादिन्यासः ॥

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्योनमः, मुखे । महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्योनमः हृदि । एं वीजायनमः, नाभौ । ॐ एँ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, इति मूलेनकरौ संशोध्य.....

॥ करन्यासः ॥

ॐ एँ अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यान्नमः ।
ॐ क्लीं मध्यमाभ्यान्नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्या-

नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यान्नमः । ॐ एं ह्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ।

॥ अक्षरन्यासः ॥

ॐ एं नमः, शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे ।
ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं
नमः वामकर्णे । ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यै नमः
वामनासापुटे ॐ विं नमः, मुखे । ॐ च्चे नमः, गुह्ये ।

एवं विन्यस्याष्टवारम्भलेन व्यापकं कुर्यात् ।

॥ दिङ्न्यासः ॥

ॐ एं प्राच्यैनमः । ॐ एं आग्नेयैनमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै
नमः ॐ ह्रींनैऋत्यैनमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यैनमः । ॐ क्लीं
वायव्यैनमः ॐ चामुण्डायै उदीच्यैनमः । ॐ चामुण्डायै
ऐशान्यैनमः । ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वैनमः ।
ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे भूम्यैनमः ।

॥ ध्यानम् ॥

खङ्गं चक्रगदेषु चापपरिधाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शं द्वं सं दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गं भूषावृताम् ।
नीलाशमद्युतिमास्यपाददशकां सेवेमहाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते परौकमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥
अक्षम्बक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मंधनुः कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिञ्चर्चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् ।

शूलं पाशसु दर्शने च दधतीं हस्तै प्रसन्नाननां,
सेवेसैरिभर्मदिनीमि ह महालक्ष्मीं सरोजम्थिताम् ॥ २ ॥
घटा शूलहलानिशङ्क्ष्मुशले चक्रधनुः सायकं,
हस्ताब्जै ईधतीं घनान्तविलसच्छीतां शुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्ध्रवां त्रिजगतामाधारभूतां महा,
पूर्वामित्रसरस्वतीमनुभजे शुभादिदेत्यादिनीम् ॥ ३ ॥

सङ्केत— इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचार से देवी
की पूजा करे । पश्चात् १०८ या १००८ बार नवर्ण मन्त्र का जप करना
चाहिये । जप करने के पहले ही 'एं ह्रीं अक्षमालिकायैनम्' इस मन्त्र से माला
की पूजा करके निम्नलिखित मन्त्रों से माला की प्रार्थना करे—

ॐ मां मालेमहामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वंगस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ॥
ॐ अविघ्नं कुरुमालेत्वं गृह्णामि दक्षिणेकरे ।
जपकालेचसिद्ध्यर्थम् प्रसीदममसिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थ-
साधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय णे
स्वाहा ।

इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करे । जप पूरा करके जप को
भगवती को समर्पित करते हुये कहे—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्करञ्जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।
पश्चात् नीचे लिखे अनुसार सप्तशती न्यास करे ।

॥ करन्यासः ॥

ॐ ह्री अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ॐ चंतर्जनीभ्यान्नमः ।
 ॐ डि मध्यमाभ्यान्नमः । ॐ कां अनामिकाभ्यान्नमः । ॐ
 यैं कनिष्ठकाभ्यान्नमः । ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठा-
 भ्यान्नमः ।

॥ हृदयादिन्यासः ॥

ॐ ऐ स्लं नमः खङ्गुनीशूलिनीघोरा चक्रिणी गदिनीतथा ।
 ॐ ऐं नो नमः शङ्खिनो चापिनी वाणभुशुण्डी परिघायुधा ।
 हृदयायनमः ।

ॐ ऐं फ्रें नमः ॐ शूलेनपाहि नो देवि पाहिखङ्गेनचाम्बिके ।
 घटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च । शिरसेस्वाहा ।
 ॐ ऐं क्रीं नमः ॐ प्राच्यांरक्ष प्रतीच्याऽच्च चण्डिकेरक्ष दक्षिणे ।
 आमणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥ शिखायैवौषट् ।
 ॐ ऐं म्लं नमः ॐ सौम्यानियानिरूपाणि त्रैलोक्यविचन्ति ।
 यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तभुवम् ॥ कवचायहुम् ।
 ॐ ऐं व्रे नमः ॐ खङ्गुशूलगदादीनि यानिचास्त्राणितेऽम्बिके ।
 करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्षसर्वतः ॥ नेत्रत्रयायवौषट् ।
 ॐ ऐं श्रूं नमः ॐ सर्वस्वरूपेसर्वेशो सर्वशक्तिसमन्विते ।
 भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ अस्त्रायफट् ।

॥ ध्यानम् ॥ १

विद्युदाम समप्रभांमृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
 कन्याभिः करवालखेटविलसद्वस्ताभिरासेविताम् ।
 हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाऽचापङ्गुणन्तर्जनीं
 विभ्राणामनलात्मिकांशशिधरांदुर्गान्त्रिनेत्राम्भजे ॥

अर्थ— जिनके अङ्ग की शोभा बिजली के समान हैं, जो सिंह की सवारी पर बैठी हुई भयङ्गकर प्रतीत होती हैं, हाथों में तलवार व ढाल लिए ऐसी अनेक कलाएं जिनकी सेवा में खड़ी हैं, जो अपने हाथों में चक्र गदा, तलवार, ढाल, वाण धनुष, पाश, और तर्जना मुद्रा धारण किये हुये हैं, जिनका स्वरूप-अग्निमय है तथा जिनके माथे पर चद्रमा कामुकुट शोभा पा रहा है, ऐसी-तीन नेत्र वाली श्री दुर्गा देवी का ध्यान करता हूँ ।

इस प्रकार श्री दुर्गा देवी का ध्यान करके आगे लिखा तन्त्र रूप देवी सूक्त का पाठ करे ।

॥ तन्त्ररूपन्देवी सूक्तम् ॥

ॐ ऐं हृसों नमः १ । ॐ ऐं ह्रीं नमः २ । ॐ ऐं श्रीं
 नमः ३ । ॐ ऐं हूं नमः ४ । ॐ ऐं क्लीं नमः ५ । ॐ ऐं रौं
 नमः ६ । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ७ । ॐ ऐं म्लीं नमः ८ । ॐ ऐं प्लूं
 नमः ९ । ॐ ऐं स्हौं नमः १० । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ११ । ॐ ऐं ग्लूं
 नमः १२ । ॐ ऐं व्रीं नमः १३ । ॐ ऐं सौं नमः १४ । ॐ ऐं
 लूं नमः १५ । ॐ ऐं ल्लूं तमः १६ । ॐ ऐं द्रां नमः १७ ।

ॐ एँ क्सां नमः १८ । ॐ एँ क्ष्म्रीं नमः १९ । ॐ एँ ग्लौं
नमः २० । ॐ एँ स्कं नमः २१ । ॐ एँ त्रूं नमः २२ ।
ॐ एँ स्क्लूं नमः २३ । ॐ एँ क्रौं नमः २४ । ॐ एँ श्रीं
नमः २५ । ॐ एँ म्लूं नमः २६ । ॐ एँ क्लूं नमः २७ ।
ॐ एँ शां नमः २८ । ॐ एँ ल्हीं नमः २९ । ॐ एँ स्त्रूं नमः ३० ।
ॐ एँ ल्लीं नमः ३१ । ॐ एँ लीं नमः ३२ । ॐ एँ सं
नमः ३३ । ॐ एँ लूं नमः ३४ । ॐ एँ हूं सूं नमः ३५ । ॐ एँ
श्रूं नमः ३६ । ॐ एँ जूं नमः ३७ । ॐ एँ हूं स्लरीं नमः ३८ ।
ॐ एँ स्क्रीं नमः ३९ । ॐ एँ क्लां नमः ४० । ॐ एँ श्रूं
नमः ४१ । ॐ एँ हं नमः ४२ । ॐ एँ ल्हीं नमः ४३ । ॐ
ओ एँ क्सूं नमः ४४ । ऐं ॐ द्रौं नमः ४५ । ॐ एँ क्लूं
नमः ४६ । ॐ एँ गां नमः ४७ । ॐ एँ सं नमः ४८ । ॐ एँ
ल्सां नमः ४९ । ॐ एँ फीं नमः ५० । ॐ एँ स्लां नमः ५१ ।
ॐ एँ ल्लूं नमः ५२ । ॐ एँ फैं नमः ५३ । ॐ एँ ओं
नमः ५४ । ॐ एँ स्म्लीं नमः ५५ । ॐ एँ ल्हां नमः ५६ ।
ॐ एँ ओं नमः ५७ । ॐ एँ हूं लूं नमः ५८ । ॐ एँ हं
नमः ५९ । ॐ एँ नं नमः ६० । ॐ एँ स्रां नमः ६१ । ॐ एँ
वं नमः ६२ । ॐ एँ मं नमः ६३ । ॐ एँ म्क्लीं नमः ६४ ।
ॐ एँ शां नमः ६५ । ॐ एँ लं नमः ६६ । ॐ एँ भौं नमः
६७ । ॐ एँ ल्लूं नमः ६८ । ॐ एँ हौं नमः ६९ । ॐ एँ ईं
नमः ७० । ॐ एँ चें नमः ७१ । ॐ एँ ल्क्रीं नमः ७२ । ॐ एँ

हूं लरी नमः ७३ । ॐ एँ क्ष्म्लरीं नमः ७४ । ॐ एँ पूं नमः ७५ ।
ॐ एँ श्रौं नमः ७६ । ॐ एँ हौं नमः ७७ । ॐ एँ भ्रूं
नमः ७८ । ॐ एँ क्स्त्रीं नमः ७९ । ॐ एँ आं नमः ८० ।
ॐ कूं नमः ८१ । ॐ एँ त्रूं नमः ८२ ।

॥ इति तन्त्ररूपन्देवीसूक्तम् ॥

तन्त्र रूप देवी सूक्त का पाठ कर नेकेपश्चात् भगवती की प्रार्थना करता
हुआ क्षमा याचना करके पाठ-कार्य समाप्त करे ।

हरिविरञ्चिमहेश्वरपूजिताम्—
भगवतीञ्जनदुर्गतिहारिणीम् ।
सकलतन्त्रमयीञ्जगदीश्वरीं—
सुखमयीञ्जगताञ्जननीभजे ॥ १ ॥
सर्वार्थसाधनकरीम्महतीमुदारां—
स्वर्गपिर्वर्गगतिदांकरुणावताराम् ।
संसारतारणपरांहतपापभारान्—
दुर्गन्निमामि शिरसाऽहमनन्तसाराम् ॥ २ ॥
ईटावारव्यसुमण्डलान्तर्गताऽछलदारव्यपत्रालया—
दैशान्यान्दिशिसंस्थितेऽतिविदितेक्रोशेद्वितीयशुभे ।
विद्वद्वृन्दयुतेसलेमपुरकेग्रामेसुदेवालये—
वासन्तत्रचकुर्वतासुलिखिताप्राकाशिचैषाशुभा ॥ ३ ॥

० ३०२
गगनरामखनेत्रसुवत्सरे—

बुधदिनेमधुमासिसितेमया ।
भगवतीपदयोर्नवमीतिथौ—
जगतितन्त्रमयीसुसमर्पिता ॥
॥ इति श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती ॥
संवत् २०३० चैत्रसुदि नवमी बुधे ।
ता० ११-४-७३

अनुभव-सिद्ध तान्त्रिक मन्त्र

- जय के लिये व दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुटित करने के लिये ।
१. सामूहिक कल्याण के लिये—ॐ एं दीं नमः ।
 २. विश्व के अशुभ तथा भय विनाश करने के लिये—
ॐ एं प्रेनमः ।
 ३. विश्व रक्षा के लिये—ॐ एं यां नमः ।
 ४. संसार के अभ्युदय के लिये—ॐ एं श्वं नमः ।
 ५. विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश के लिये—एं श्रीं नमः ।
 ६. विश्व के पाप व ताप आदि के निवारण के लिये—
ॐ एं ब्रूं नमः ।
 ७. समस्त विपत्ति नाश के लिये तथा कल्याण के लिये—
ॐ एं ग्लौं मः ।
 ८. विपत्ति नाश और शुभ कल्याण के लिये—ॐ एं क्षम्लीं नमः ।
 ९. भय नाश के लिये— (क) ॐ एं श्रूं नमः
(ख) ॐ एं इं नमः । (ग) ॐ एं जुं नमः

१०. पाप नाश के लिये—ॐ एं त्रैं नमः ।
११. सर्व रोग नाश के लिये—ॐ एं ह्रौं नमः ।
१२. मोक्ष प्राप्ति के लिये—ॐ एं प्रें नमः ।
१३. स्वर्ग और मुक्ति के लिये—ॐ एं श्रूं नमः ।
१४. स्वर्ग और मुक्ति के लिये—ॐ एं प्रें नमः ।
१५. बाधा शान्ति के लिये—ॐ एं सें नमः ।
१६. सब प्रकार के कल्याण के लिये—ॐ एं स्ल्कीं नमः ।
१७. शक्ति प्राप्ति के लिये—ॐ एं प्रीं नमः ।
१८. भगवती की प्रसन्नता के लिये—ॐ एं ल्लूं नमः ।
१९. विविध उपद्रव से बचने के लिये—ॐ एं ह्रौं नमः ।
२०. सुख के लिये—ॐ एं सः नमः ।
२१. समस्त भय दूर करने के लिये—ॐ एं इं नमः ।
२२. शत्रु नाश के लिये—ॐ एं सूं नमः ।
२३. समस्त ग्रह पीड़ाओं के नाश के लिये तथा दुःस्वप्न
नाश के लिये—ॐ एं ह्रौं नमः ।
२४. दुष्ट लोगों की शक्ति-नाश के लिये तथा भूतप्रेतादि
नाश के लिये—ॐ एं ओं नमः ।
२५. संग्राम में भय रहित होने के लिये तथा शत्रुनाश के
लिये—ॐ एं सूं नमः ।
२६. वालरक्षो के लिये एवं कल्याण के लिये—ॐ एं आं नमः ।
२७. पापनाश के लिये तथा रोगनाश के लिये—ॐ एं द्रां नमः ।

२८. दारिद्र्य नाश के लिये—ॐ ऐं लकीं नमः ।
२९. शत्रु भय निवारण के लिये—ॐ ऐं क्रूं नमः ।
३०. समस्त उत्पात तथा महामारी आदि के नाश के लिये—
ॐ ऐं प्रां नमः ।
३१. धन-धान्य-पुत्र आदि प्राप्ति के लिये तथा समस्त बाधायें निवारण के लिये—ॐ ऐं सः नमः ।
३२. त्रैलोक्य रक्षा के लिये एवं समस्त दुष्ट जनों की दुष्टता
ॐ ऐं ज्ञहीं नमः ।
३३. लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये तथा विद्या-प्राप्ति के लिये—
ॐ ऐं ह्रां नमः ।
३४. भगवती के प्रसन्नता की लिये तथा कल्याण के लिये—
नाश के लिये—ॐ ऐं म्लीं नमः ।
३५. बुद्धि सन्मार्ग पर लाने के लिये—ऐं ल्लूं नमः ।
३६. सर्प-अग्नि-जल तथा शत्रु आदि से रक्षा के लिये—
ॐ ऐं हौं नमः ।
३७. यशोवृद्धि तथा समस्त कल्याण के लिये—ॐ ऐं त्रें नमः ।
३८. समस्त कार्य-सिद्धि के लिये—ॐ ऐं ब्रूं नमः ।
३९. " —ॐ ऐं स्फूं नमः ।
४०. " —ॐ ऐं ह्रीं नमः ।
४१. " —ॐ ऐं लं नमः ।

४२. " —ॐ ऐं गीं नमः ।
४३. " — ॐ ऐं यं नमः ।
४४. " —ॐ ऐं ह्लीं नमः ।
४५. " —ॐ ऐं ह्लं नमः ।
४६. समस्तपीडा शान्ति के लिये—ॐ ऐं फैं नमः ।
- सच्चेत - १२५००० जप करना चाहिये । अथवा श्री दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पूट लगा कर १०० पाठ करे ॥

॥ इत्यनुभवसिद्धतान्त्रिकमन्त्र विवरण समाप्त ॥

शिवमन्त्र

(ॐ नमः शिवाय) वा (नमः शिवाय)

राममन्त्र

(श्री रामायनमः) वा (रांरामायनमः) वा (ओं ह्रीं श्रीं ल्कों एं रां) वा (राम) वा (रामचन्द्र) वा (हं जानकी वल्लभायस्वाहा) वा (श्री रामजयरामजयजयराम)

सन्तानगोपालमन्त्र भेद प्रकार

(१)

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते । देहि में तनयड़्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः स्वः भुवः भूः ओं जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॥

“अथवा” (२)

“ॐ” क्लीं देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते ।

देहि में तनयड़्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः क्लीं ओम् ॥
इत्यादि मतभेद हैं ।

“अथवा” (३)

“ॐ” देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते ।

देहि में तनयड़्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः ।

विन्ध्यवासिनी देवी का मन्त्र

ॐ उत्तिष्ठ पुरुषिंकि स्वपिषिभयम्मेसमुःस्थितम् ।

यदिशक्यमशक्यंवा तन्मेभगवतिशमयस्वाहा ॥

परिशिष्ट निष्यः

भगवान शिवके प्रधान दो मन्त्र हैं १ षडक्षर- दूसरा पञ्चाक्षर ।
शिवपुराण में दोनो मन्त्रों का विशेष महत्व वर्णन किया है-

प्रमाण—अरुद्रो वा सरुद्रो वा सकृत्पञ्चाक्षरेणवा ।

अपूज्यः पूजितोवापि मूढोवा मुच्यतेनरः ॥

षडक्षरेणवा देवि तथा पञ्चाक्षरेणवा । इत्यादि

अर्थ—

किसीने चाहे दीक्षा ली हो चाहे न ली हो—पतित हो अथवा मूर्ख-यदि श्रद्धापूर्वक एक बार भी (ओं नमः शिवाय) इस षडक्षर मन्त्र का अथवा (नमः शिवाय) इस मन्त्र का जप करता है वा पूजन करता है तो वह मोक्ष को प्राप्त करता है ।

इसी प्रकार षडक्षर राम मन्त्र का भी बड़ा महत्व शास्त्रों में वर्णित है ।

(श्रीरामायनमः) षडक्षरराममन्त्र है ।

(रांरामायनमः) यह भी षडक्षर राममन्त्र है ।

प्रमाण—सर्वेषांराममन्त्राणामन्त्रराजः षडक्षरः ।

तारकंब्रह्मवेदोक्तं तेनपूजा प्रशस्यते ॥ (अ०सं० ३३०)

अर्थ—

आगे सर्वसाधारण जनता के लिये कुछ देवताओं के मन्त्र लिखे जा रहे हैं—उनका जप करने से सर्वाभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने में कोई भी सन्देह नहीं है ।

दुर्गादिवीमन्त्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

महामृत्युञ्जयमन्त्र (त्र्यम्बकमन्त्र)

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः श्यम्बकंयजामहे सुगन्धि-
म्पुष्टि वर्धनम् । ऊर्वास्कमिववन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्-
भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ ।

संकेत—महामृत्युञ्जय मन्त्र मैं कुछ लोग (ॐ) तीन बार लगाते हैं ।

मृत्युञ्जयमन्त्र

त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वास्कमिववन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥

अन्नपूर्णामिन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति महेश्वरि अन्नपूर्णेस्वाहा

कुवेरमन्त्र

ॐ यक्षायकुवेरायवैश्रवणायधनधान्याधिपतयेधन्यधान्य-
समृद्धिम्मे देहिदापयस्वाहा ।

कृष्णमन्त्र

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभायस्वाहा । वा
(क्लींकृष्णक्लीं) वा (क्लींकृष्णायगोविन्दाय गोपीजनवल्ल-
भायस्वाहा ।) वा (ओंनमोभगतेवासुदेवाय)

कार्तवीर्यमन्त्र

ओं फों चीं क्लीं भ्रं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्य-
जुं नायनमः ।

सङ्केत—इस मन्त्र के जप से नष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है ।

लक्ष्मीमन्त्र

ओं एं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यैनमः ।

महालक्ष्मीमन्त्र

ओं श्रीं ह्रीं एं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै
नमः (स्वाहा)

बागीश्वरी मन्त्र

ह्रीं वद वद वाग्वादिन्यैस्वाहा ह्रीं ।

वगलामुखीमन्त्र

ओं ह्रीं वगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय
जिह्वांकीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ओं स्वाहा ।

वटुकभैखमन्त्र

ॐ वटुकाय, आपदुद्धरणाय कुरुकुरु वटुकायह्रीं ।

नारायणमन्त्र

ओंनमोनारायणाय ।

गङ्गामन्त्र

ऐं हिलिहिलि मिलिमिलि गङ्गे मां पावय पावय स्वाहा ।

महाकालीमन्त्र

(फ्रेंकरिण्याम्) वा (ॐ फे फे हूँ हूँ पशुगृहाण हुँ फट् स्वाहा । वा) ॐ हर हर स्तम्भस्तम्भ कील कील स्वाहा ।

महागणपतिमन्त्र

[१] ॐ श्री ह्रींगलौ गंगणपतये वरवरद सर्वजनं में वश-
मानयस्वाहा ।

[२] “ॐ वत्ततुण्डायहुँ” इतिवा गणेशमन्त्रः

[३] वक्त्रतुण्डैकदंष्ट्रायक्लींह्रीं श्रीं गंगणपतये वरवरद सर्व-
जनं में वशमानयस्वाहा । यह त्रैलोक्य वश करने का
मन्त्र है (मन्त्रमहादधौ)

उच्छिष्टगणपतिमन्त्र

ॐ हस्तपिशाचि लिखे स्वाहा ।

भुवनेश्वरीमन्त्र

(ह्रीं) वा (ऐं ह्रीं श्रीं)

॥ इति देवताओं के मन्त्र समाप्त ॥

सङ्केत—यहाँ से आगे कुछ देवताओं की गायत्री लिखी जायगी ।

रुद्रगायत्री—तत्पुरुषायविद्यहे महादेवायधीमहि तन्नोरुद्रः
प्रचोदयात् ।

महालक्ष्मोगायत्री—महालक्ष्म्यैविद्यहे महाश्रियै धीमहितन्नः
श्रीप्रचोदयात् ।

हनुमद्गायत्री—हनूमतेविद्यहे आञ्जनेयाय धीमहि तन्नोवीरः
प्रचोदयात् ।

दुर्गागायत्री—कात्यायन्यैविद्यहे कन्याकुमार्यै धीमहि तन्नो
दुर्गाप्रचोदयात् ।

वागीश्वरीगायत्री—ऐं वागीश्वर्यैविद्यहे क्लींकामेश्वर्यै
धीमहि । सौस्तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ।

बगलामुखीगायत्री—बगलामुख्यैविद्यहे स्तम्भिन्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

अन्नपूर्णागायत्री—भगवत्यैविद्यहे माहेश्वर्यै धीमहि तन्नो
अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ।

रामगायत्री—दाशरथयैविद्यहे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो
रामः प्रचोदयात् ।

रविगायत्री—सप्ततुरगायधीमहि सहस्रकिरणाय धीमहि तन्नो
रविः प्रचोदयात् ।

कृष्णगायत्री—दामोदरायविद्यहे वासुदेवाय धीमहि तन्नः
कृष्णः प्रचोदयात् ।

ज्वरगायत्री—भस्मायुधायविद्यहेंक्लीं एकदन्ष्ट्राय धीमहि
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात् ।

॥ इति कुछ देवताओं की गायत्री विषय समाप्त ॥

॥ मन्त्रों के विषय पर संक्षिप्त विवेचन ॥

शारदातिलक में मन्त्र तीन प्रकार के वर्णन किये हैं—पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग
और नपुंसकलिङ्ग ।

१—जिस मन्त्र के अन्त में हुंफट हो—उसे पुरुष मन्त्र अर्थात् पुलिङ्ग कहते हैं ।

२-जिस मन्त्र के अन्त में स्वाहा हो उस मन्त्र को स्त्री मन्त्र अर्थात् स्त्री लिङ्ग कहते हैं ।

३-जिस मन्त्र के अन्त में नमः हो उस मन्त्र को नपुंसक मन्त्र अर्थात् नपुंसक लिङ्ग कहते हैं ।

मन्त्र महोदधि में भी इसका विवेचन सुचारू रीति से किया गया है ।

१-जिस मन्त्र के अन्त में (वषट्) हो फट् हो उसे पुरुष मन्त्र जानना चाहिये ।

२-जिस मन्त्र के अन्त में (वौषट्) व (स्वाहा) हो उसे स्त्री मन्त्र जानना चाहिये ।

३-जिस मन्त्र के अन्त में (नमः) हो उसे नपुंसक मन्त्र जानना चाहिये । कर्म भेद से मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिये—जैसे—वशीकरण, उच्चाटत आदि में पुरुष मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये । साधारण छोटे कर्म के लिये व रोगनाश आदि के लिये स्त्री मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये । अभिचार में नपुंसक मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए । शारदातिलक व मन्त्रमहोदधि में विशेष विस्तार से लिखा है ।

॥ मन्त्रों के भेद ॥

१ जाग्रत् २ सुषुप्ति ३ मित्र ४ शत्रु ५ सौम्य ६ कूर् ७ अतिकूर् ८ छिन्न
९ रुद्र १० शक्तिहीन ११ पराड्-मुख १२ वधिर १३ नेत्रहीन १४ दग्ध १५ व्रस्त
१६ मलिन १७ मदोन्मत्त १८ मूँछित १९ प्रध्वस्त २० बालक २१ कुमार
२२ युवा २३ ग्रीड़ २४ वृद्ध २५ केकर २६ कूटये मन्त्रों के भेद हैं—दुष्ट मन्त्रों
का त्याग करके शुभ मन्त्र ग्रहण करना चाहिये । इनका विस्तार न रदपञ्च-
रात्र आदि ग्रन्थों में है ।

मन्त्रों में अक्षरों के अनुसार ५ भेद

१-एक अक्षर वाला मन्त्र “पिण्ड” कहलाता है ।

२-दो अक्षर वाला मन्त्र “कर्तरी” कहलाता है ।

३-तीन अक्षर से नव अक्षर तक के मन्त्र को “बीज” कहना चाहिये ।

४-दस अक्षर से बीस अक्षर तक के मन्त्र को “मन्त्र” कहना चाहिये ।

५-बीस अक्षर से अधिक अक्षर वाला मन्त्र “मालामन्त्र” कहलाता है ।

“नारदपञ्चरात्र द्वितीय राज के ७ वें अव्याय में तथा”

न्त्रमहोदधि और शारदातिलक में भी वर्णन आया है ।

पुलिलग आदि मन्त्र विचार

मन्त्राः पुन्देवताज्ञेया विद्या स्त्री देवता स्मृताः ।

पुंस्त्रीनपुंसकात्मानो मन्त्रा सर्वेसमीरिताः ।

पुम्मन्त्राहुंफडन्ताः स्युद्विठान्ताःस्युः स्त्रियोमताः ।

नपुंसकाः नमोन्ताः स्युरित्युक्ता मनवस्त्रिधा ॥

इतिशारदा तिलके ।

स्त्रीपुंनपुंसकाः प्रोक्तामनवस्त्रिविधावुधैः ।

वषडन्तन्ताः फडन्ताश्च पुमांसो मनवःस्मृताः ॥१॥

वौषट् स्वाहान्तगानार्यो हुंनमोन्ता नपुंसकाः ।

इतिमन्त्रमहोदधौ ।

पुलिलङ्गः स्त्रीलिङ्गः नपुंसकलिङ्गः भेदानुसार मन्त्र

१-जिस मन्त्र के अन्त में =वषट्-फट्-हुफट हों वह पुलिलङ्ग कहलाता है ।

२-जिस मन्त्र के अन्त में =वौषट्-स्वाहा हों वह स्त्रीलिङ्ग कहलाता है ।

३-जिस मन्त्र के अन्त में =नमः हो वह नपुंसकलिङ्ग कहलाता है ।

(ओं शब्द का प्रयोग किन मन्त्रों में नहीं करना चाहिये)

वाक् चैव कामः शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते ।

तदाद्येषु च मन्त्रेषु प्रणवन्नैव योजयेत् ॥१॥

अर्थ-

जिन २ मन्त्रों के आदि में वागवीज 'ऐ' कामबीज 'कली' शक्तिबीज

‘ही’ श्रीबीज ‘श्री’ हो तो उन मन्त्रों में ‘ॐ’ कार नहीं लगाना चाहिये आदि
में— ये बीज स्वयं ॐकार रूप हैं ।

मन्त्रों में ओंकार लगाने का नियम

प्रणवाद्यङ् गृहस्थानन्तच्छून्यन्निष्फलम्भवेत् ।
आद्यन्तयोर्वनस्थानांयतीनाम्महतामपि ॥१॥

अर्थ-

गृहस्थ को मन्त्र के आदि में प्रणव ‘ओं’ लगाना चाहिये बिना प्रणव के
मन्त्र जपना निरथंक होता है । वानप्रस्थ तथा यती आदि महात्माओं को आदि
तथा मन्त्र के अन्त में इस प्रकार दो बार ‘ओं’ लगाना चाहिये यथा “ओनमः
शिवाय शिवायनमः ओम्” अथवा अों नमः शिवाय ओम् ।

जपे होमे तथा दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि ।

अशून्यन्तुकरङ् कुर्यात् सुवर्णरजतैः कुशैः ॥

अर्थ-

जपमें-होममें - दानमें वेदपाठ आदि के स्वाध्याय में तथा पितृ-कर्म में
अर्थात् तर्पण व श्राद्ध आदि में सूर्वण-चांदी-कुश इन तीनों से अथवा इनमें
से किसी भी एक से युक्त हस्त अवश्य होना चाहिये अन्यथा सब कर्म
निष्फल हो जाता है । आशय यह है कि पवित्री कुश की हो अथवा सोने या
चांदी का छल्ला या अगुँठी युक्त हस्त से कार्य करना चाहिये ।

-००-००-

॥ नवार्णमन्त्रार्थसंकड़ेतः ॥

ओमिति

व्याख्या — सिद्धानाऽचैवसर्वेषाम्वेदवेदान्तयोस्तथा
अन्येषामपिशास्त्राणान्निष्ठाप्योङ्कारउच्यते ॥

व्याख्या—अवधातुर्गतिकर्मा - प्रवेशकर्मचिअव्यतेप्रविश्यते
गुणैरिति ओम् अथवा अवति प्रविशतिगुणानिति ओम् ।

अवधातो: “अवतेष्टिलोपः” इत्यनेनोणादिसूत्रेण मन्त्रत्यये
टिलोपे सति ” ज्वरत्वर० ” इत्यादि कृदन्त सूत्रेण
वकास्योपधायाश्चदूयोरुठोः सर्वर्णदीर्घत्वे गुणोसति । ओम्
इति सिद्ध्यति । अवतिरक्षति । जानाति-गच्छति व्याप्तोति ।
प्रकाशयति । प्रीणयति । वर्द्धयति । लीनङ्करोति
ददाति । हिनस्ति । आलिङ्गयति । प्रदर्शयति । दीप्यति
इच्छति । चालयति । पाचयति तर्पयति इत्यादयोऽनेकेऽर्थः-।
सन्ति । कृन्मजन्त इत्यनेनाव्ययत्वम् । स्वारादिनिपातमव्यम् ।

॥ इतिसुत्रेणवाव्ययत्वम् ॥

अर्थ

जो संसार से पार करे । जो संसार को अपने मन में लीन करे । जो
अनेक सुख प्रदान करे । जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि को
नाश करे जो उपासक को अपने मन से सम्बन्धित करे । जो आत्मदर्शन करावे
जो प्रकाश से अज्ञान नष्ट करे । जो प्राणियों को सन्मार्ग पर लगावे । जो

संसार का चालक है जो सर्वज्ञ है । जो निराकार है । जो समस्त चराचर का आधार है । इत्यादि ३० के अनेक अर्थ है ।

ओम्—यह अथय वाचक पद है, तीनों काल में लीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में सदा एक सा रहने वाला है इसमें किसी प्रकार का विकार नहीं होने सकता है । अतएव विकारी के साथ उसका प्रयोग नहीं होता है, केवल परमात्मा आदि में युक्त होता है ।

ॐ इतिस्मरणादेव ब्रह्मज्ञानं परावरम् ।
तदेकमोक्षसिद्धिंच्च तमेवामृतमश्नुते ॥

॥ नवार्णमन्त्रः ॥

“ॐ” ऐहींक्लींचामुण्डायैविच्चे ।

नवार्ण मन्त्रका ड्ढुर देव्यथर्वशीर्षउपनिषत् में ।

वाड्-माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ॥

सुर्योऽवामश्रोत्रविन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ॥

नारायणेन संमिश्रोवायुश्चाधरयुक्तथा ॥

विच्चेनवार्णकोऽणुः स्यान्महदानन्ददायकः ॥

। व्याख्याहिन्दीभाषामें ।

वाक्=वाक् वौज-ऐं

माया=मायावीज-हीं

ब्रह्मसूः कामवीज-क्लीं

तस्मात्-षष्ठम्=कामवीजके ककारसे छठा अक्षर च हुआ

वक्त्रसमन्वितम्=दीर्घाकार से युक्त (च)चा हुआ।

सुर्ये=सुर्यका अर्थमकारहुआ—म

अवामश्रोत्रम्=पच्चमस्वर-उकारहुआ इससे मु-बना

विन्दुः=अनुस्वार लगाने से —मुम् सिद्ध हुआ ।

टात्तृतीयकः=टअक्षरसेतृतीयअक्षर-ड=हुआ ।

नारायणेनसंमिश्रः=दीर्घाकारसेयुक्तड-डा हुआ ।

वायुः=यकार को कहते हैं=य सिद्ध हुआ

अधरयुक्=अधरोष्ठकाअर्थ वारहवाँस्वर- ऐ हुआ-य में ऐ स्वरलगानेसे—यै सिद्धहुआ ।

विच्चे=विच्चेकासम्बन्ध करने से ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै-विच्चे,, मन्त्रवना ।

नवार्णको=नव-अर्णकः अर्ण शब्दका अर्थवर्ण है अर्थात्

नववर्णवाला मन्त्र—नवार्णमन्त्र है ।

अणु=काअर्थ मन्त्र है

=महदानन्ददायकः।=उपासकों को आनन्ददायक है ।

डामरतन्त्रोक्तनवार्णकाअर्थ

१ २ ३
श्लोक-निर्धूतनिखिलध्वान्ते ! नित्यमुक्ते ! परात्परे !

४ ५ ६ ७

अखण्डब्रह्मविद्यायै चित्सदानन्दरूपिणि ॥१॥

अनुसन्दध्महे नित्यं वयंत्वांहृदयाम्बुजे । इत्थं विशदयत्येषा कल्याणीयानवाक्षरी ॥ २ ॥

व्याख्या-ऐहीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे यहनवार्णमन्त्र है
इसमें-ऐं-हीं- क्लीं-चामुण्डायै- वित्-च-ई-ऐसे

सात पद हैं। पुर्व के तीन पद संबोधन हैं। चामुण्डायै यह पद तादर्थ्य में चतुर्थी है। वित्-च-इये पद संबोधन रूपसे ऐं-हीं-कलीं—इनके विशेषण हैं। डामर तन्त्रके प्रथमश्लोक में भी सात पद हैं—अतः नवार्णमन्त्र के सातपदों का अर्थ क्रमशः जान लेना चाहिये। जोपद विशेषण है उनको विशेष्य ऐं-हीं-कलीं में लगाकर अर्थ जानना चाहिये।

(इ) अस्य-आनन्दब्रह्मणः स्त्री ई तत्संबोधने हृस्वेकृते-इ-इति ऐसी व्युत्पत्ति जानना चाहिये अर्थात् आनन्द-ब्रह्म महिषि।

(चामुण्डायै) चमूं सेनांवियदादिसूमूहरूपां डाति(लाति) आदत्ते इति चामुण्डा। डलयोरभेदइति वोद्ध व्यम्। पृष्ठोदरादित्वात् सर्वसुस्थमित्याहु अखण्डब्रह्मविद्यैवचामूण्डापदस्यार्थमाहुरिति केचिदाचार्याः। अन्येतु-चामुण्डाशब्दो मोक्ष कारिणीभूतनिविकल्प वृत्तिविशेषपरः। चामुण्डायै अत्रतुतदर्थ्ये चतुर्थी ज्ञेया।

१- निधूंतनिखिलध्वान्तत्वम्=ज्ञानेनैवाखिलाज्ञाननाश-त्वम्—अर्थात् ज्ञानकेही द्वारा समस्त अज्ञाननाश अतएव चिदरूप महासरस्वती वाग्भववीज ऐसे संबोधित की जाती है।

२— नित्यमुक्तत्वम् = त्रिकालावाध्यत्वकल्पितवियदादिप्रपञ्चनिरासाधिष्ठानत्वम् अर्थात् त्रिकाल में सदा एक रूप तथा कल्पित सभी प्रपञ्चों से रहित। अतएव—सद्रूपात्मक महालक्ष्मी माया (हीं) वीज से संबोधित की जाती है।

६— परात्परत्वम् = परउत्कृष्टः सर्वानुभवसंवेद्य आनन्द एव तस्यैवपुरुषार्थत्वात्। आत्मनःकामाय सर्वप्रियं-भवतीतिश्रुत्या तदितरेषामपि तदर्थत्वेनानन्दस्यैव सर्वशेषितयापरत्वात्। सच्चमानुषानन्दमारभ्योत्तरोत्तरं शतगुणाधिक्येन श्रुतौ वहुविधोवणितः। तेषुपरमातिशायी स एको ब्रह्मणआनन्द इति परमावधित्वेनाम्नात एवपरात्परत्वम्। अर्थात् मनुष्यों के आनन्द से लेकर उत्तरोत्तर असङ्गेय आनन्दों से युक्त परमानन्द स्वरूप। अतएव—आनन्द स्वरूप प्रधान महाकाली कामवीज (कलीं) से संबोधित की जाती है। सच्चिदानन्दात्मक ब्रह्मरूपत्वादेव शक्तेरपित्रिरूपत्वम् सुस्पष्टमेव=अर्थात् सच्चिदानन्द रूप होने से शक्ति के भी तीन रूप (ऐं) महासरस्वती (हीं) महालक्ष्मी (कलीं) महाकाली हुये। त्वांहृदयकमले अनुसंदध्महे अर्थात् हृदय कमल में चिन्तन करता हुँ अथवा धारण करता हुँ।

नवार्ण मन्त्र का अर्थ—हेचित् स्वरूपिणी सरस्वती ! हे सत्-स्वरूपिणी महालक्ष्मी ! हे आनन्दस्वरूपिणी महाकाली ! ब्रह्मविद्या पाने के लिये हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं ।

सरल अर्थ—हे महाकाली—महालक्ष्मी—महासरस्वती स्वरूपिणी दुर्गादेवी आपको नमस्कार है हमारा मनोभीष्ट पूर्ण कीजै ।

| नवार्ण मन्त्र में ओम् लगाने का विचार ।

१ २ ३ ४

श्लोक—वाक् चैवकामः शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्चकथ्यते ।

तदाद्येषु चमन्त्रेषु प्रणवन्नैव योजयेत् ।

अर्थ—जिन मन्त्रों के आदि में १ ऐं, २ कलीं ३ ह्रीं ४ श्रीं, हों तो उन मन्त्रों के आदि में ॐ नहीं लगाना चाहिये । अतः नवार्ण मन्त्र में ॐ नहीं लगाना चाहिये । हम लोगों की यही गुरु परंपरा है ।

सङ्केत—नवार्णमन्त्र के ऋष्यादित्याषड्जन्यासादिका तथा जप का महत्व मेस्तन्त्र-कात्यायनी-तन्त्र-चिदम्बरर स्य आदि ग्रन्थों में विशेष विस्तार से वर्णन है । नवार्णमन्त्र तान्त्रिक ग्रन्थों में मन्त्रराज माना गया है ।

इससे बढ़कर दूसरा मन्त्र नहीं है ।

ऐं—ह्रीं—कलीं—शक्तियों पर विमर्श

इन बीजों में 'ऐं' बीज असङ्गत्य शक्तियों का बीज है । दुर्गा का तो प्रधान बीज है अतः ७०० मन्त्र जो दुर्गा सप्तशती के हैं उनमें प्रति मन्त्र में

'ऐं' बीज लगाने का विधान तान्त्रिक ग्रन्थों में है । निम्नलिखित कुछ ही देवताओं के 'ऐं' बीज का निर्णय लिखा जा रहा है ।

प्रमाण—तत्र—कोष

'ऐं' यह बीज किन-किन शक्तियों का है कुछ ही नाम निर्देश किये जा रहे हैं ।

दुर्गाबीज

कृषाङ्गिनी बीज

वाग् (सरस्वती) बीज

मात्राद्वादशी बीज

त्रिपुरा बीज

विभूति बीज

धन्या बीज

विभूति बीज

पद्मा बीज

अधरोष बीज

मातृकेश्वर बीज

परप्रहा बीज

शक्ति बीज

निरञ्जन बीज

विजया बीज

मूर्ध बीज

विश्वमोहिनी बीज

रमण बीज

भैरवी बीज

धाम बीज

आत्मज्ञान बीज

भौतिक बीज

ऊर्ध्व बीज

मातृकाबीज

अशुमान् बीज

वर्मवीज

इन्द्राणी बीज

लोहिता बीज

गणेश्वरी बीज

चन्द्र बीज

चाण्डकेश्वर बीज

सङ्केत—इनके अतिरिक्त और भी

जगद्योनि बीज

शक्तियों के बीज हैं ।

पीठेश बीज

सद्वोज

विमल बीज

(तन्त्रकोष से)

ह्रीं वीज का निर्णय
लक्ष्मी वीज
करुणा वीज
भूवनेश्वरी वीज
भूवना वीज
रसत्रा वीज
वाणी वीज
क्षमा वीज
सकला वीज
शम्भु कान्ता वीज आदि

बलों वीज का निर्णय
काली बीज
कुसुमायुध वीज
कृ ण वीज
कुन्ती वीज
क्लेद वीज
त्रैलोक्यमोहन वीज
त्रिभूति वीज
पञ्चशर वीज
पञ्चास्य वीज
मनोभूः वीज
मनोहरी वीज
मन्मथ वीज
मार वीज
मीनकेतु वीज आदि

(तन्त्र कोष से)

कुछ वीजमन्त्रों के अर्थ लिखे जा रहे हैं ।
ह्रीं—प्रसाद वीज है हकारः=शिव । औकारः सदाशिवः ।

बिन्दु =दुख नाशकः ।

अर्थ—शिव व सदाशिव की कृपा से मेरे समस्त दुःख नाश हों ।

दुः- दुर्गा वीज है । दः दूर्गा । उकारः=रक्षा । विन्दु का अर्थ करो ।

अर्थ—हे मादुर्ग मेरी रक्षा करो ।

क्रीं—काली वीज अथवा कूर्पर वीज है । कः=काली ।
रः=ब्रह्मा । ई=माया । विन्दु= विश्वमाता ।
अर्थ—दुःखनाशक । ब्रह्मा शक्ति रूपणी महामाया काली मेरे दुःखों को नाश करो ।
ह्रीं=शक्ति वीज अथवा मायावीज है । ह ॥ शिवः । रः= प्रकृतिः । ई= माया= विन्दु= दुःख नाशक अथवा विश्वमाता ।

अर्थ—शिवयुक्त विश्वमाता महामाया शक्ति मेरे दुःखों को नाश करो ।

श्रीं= लक्ष्मी वीज है श= महालक्ष्मी । रः=धन सम्पत्ति ।

ई= तुष्टि । विन्दु= विश्वमाता अथवा दुःखनाशक ।

अर्थ= धन सम्पत्ति-तुष्टि-पुष्टि की अधिष्ठात्री माता महालक्ष्मी मेरे दुःखों को नाश करो ।

ऐं=सरस्वती= वीज है । ऐ= सरस्वती । विन्दु= दुःख नाशक । देवी सरस्वती मेरे दुःखों को नाश करो ।

सङ्क्लेत— ऐं' यह बहुत देवताओं का भी वीज है ।

॥ कतिपयवीजमन्त्रोंकेअर्थ ॥

बलों=कृष्ण वीज अथवा काम अर्थात् काली वीज है कः= कृष्ण । क = काली । ल =इन्द्रः ई = तुष्टि आदि । विन्दु=विश्वमाता—विन्दुः=दुःख नाशक ।

अर्थ—हे सर्वश्रेष्ठ मन्मथ श्रीकृष्ण मुझे सुख और शान्ति दो । अथवा - महामाया कालीमेरे समस्त दुःख दूर करो ।

(ब)

हूँ = वर्म वीज यथवा कूर्च वीज है । हः = शिवः । ऊ = भैरवः । विन्दुः = सर्वोत्कृष्टः । विन्दुः = दुःख नाशक ।

अर्थ—सर्वश्रेष्ठ भगवान् शिव मेरे दुःखोः को नाश करो ।

गं = गणेश वीज है । गः = गणेशः । विन्दुः = दुःखहरण । हे गणेश मेरे दुःख नाश करो ।

ग्लोँ = गणेश वीज है । गः = गणेश । लः = व्यापारः । लः = तेज । विन्दु = दुःख नाशक ।

अर्थ—हे ज्योतिर्मय भगवान् गणेश मेरे दुःखों को दूर करो ।

क्षौँ = नृसिंह वीज है । क्षः = नृसिंहः । र = ब्रह्मा । औ = उर्ध्वदन्त । विन्दु = दुःख नाशक ।

अर्थ—हे ब्रह्म स्वरूप उर्ध्वदन्त नृसिंह मेरे दुःखों को नाश करो ।

स्त्रीँ = वधू वीज है । सः = दूर्गोत्तारण । तः = नारक । रः = मुक्तिः । ई = माया । विन्दु = दुःख नाशकः । विन्दु = विश्वमाता ।

अर्थ—हे दुःखोत्तारणी मुक्तिस्वरूपा-माता भगवती महामाया मेरीं दुःखों से रक्षा करो ।

सङ्केत—एक ऐं वीज के अनेक अर्थ हैं । कुछ लिख दिये हैं । तन्त्र रूप में परिणत श्रीदुर्गास्पतशती के ७०० मन्त्र एक तपोमूर्ति-परमवीतराग-परमहंस-परिब्राजका-

(ट)

चार्जर्य महात्मा से संवत् २००० आश्विन मास में प्राप्त हुये थे । वे ७०० मन्त्र तथा अन्यान्य विशेष उपयोगी विषय सहित 'श्रीतन्त्रदुर्गास्पतशती' के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं । इनका पाठ करने से समस्त दूर्गापाठ का फल प्राप्त होता है । इन ७०० वीज मन्त्रों के पाठ में कवच-अर्गला कीलक-रहस्यत्रय शापोद्धार-उत्कीलन-कुञ्जिका स्तोत्र आदि कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है । केवल आदि तथा अन्त में नवार्णमन्त्र का जप यथेच्छ आवश्यक है । पुस्तक "श्रीतन्त्रदुर्गास्पतशती" निःशुल्क मिलती है केवल डाकव्ययप्रथमभेजना होगा । लेखक—शिवदत्त शास्त्री

पुस्तक मगाने का पता—

श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी

(१) एम. ए., एल. टी. (डी. जी. पी.) लेक्चरार
मकान नं० ७३ मोहाल ठाकुरान
मु० पो० -- लखना

जिं० इटावा (उ० प्र०)

श्री कुमुदेशचन्द्र जैन ४८/१६२
रेशम गली पचकूचा जनरल गंज

कानपुर १९८५

॥ विशेषावश्यकशुद्धाशुद्धपत्र ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	संकेत
पुराण	पुराणे	१	
एवमेव	एवमेव	१	३
वकित	वक्वित्	२	४
यथेच्छ	यथेच्छ	३	२४
वस्ततः	वस्तुतः	५	८
घण्डा	घण्टा	७	२२
मध	मधु	७	७
खङ्ग	खङ्ग	७	२०
यान्त्रादि	यन्त्रादि	९	१२
त्रौलोपकाराय	लोकोपकाराय	१०	१७
पराद्वे	पराद्वे	११	४
सूर्य	सूर्य	११	१२
दीर्घार्थः	दीर्घार्थः	१२	१८
षट्कोणेषु	षट्कोणेषु	१३	
विन्दुमध्ये	विन्दुमध्ये	१४	यन्त्र विवरण
मृत्यवेनमः	मृत्यवेनमः	१४	१८
रक्तदन्तिकायै	रंरक्तदन्तिकायै	१४	१०
अङ्गाकर्म्यैनः	अङ्गांशाकर्म्यैनमः	१४	११
वांत्रहम्यैनमः	वांत्राहम्यैनमः	१४	१२
क्षनिक्रृतपत्नमः	निक्रृतयेनमः	१६	पंक्ति १९
पश्चिमनिक्रृतयोः	पश्चिमनिक्रृतयोः	१६	९
		"	
		११	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	संकेत
खँख़ज्जनपनमः	खंखड्गायनमः	१६	, १५
शंत्रिशूलायनमः	त्रित्रिशूलायनमः	१६	, १७
प्राणप्रतिष्ठापर्यन्त	प्राणप्रतिष्ठापर्यन्त	१७	, ७
आवस्यक	आवश्यक	१७	, ११
नवार्जन्मन्त्र	नवार्णमन्त्र	१८	, ३
महासरस्वत्योदेवता	महासरस्वत्योदेवता:	१८	, ६
ऋषिभ्यो	ऋषिभ्यो	१८	, १३
गृह्ये	गुह्ये	१८	, १५
अङ्ग्न्यास	अङ्ग्न्यास	१८	२१
स्थापत	स्थापित	१९	२१
करन्त्यास	करन्यास	१९	१८
स्पर्श	स्पर्श	१९	२
वन्दत	वन्दन	१९	३
अङ्ग्न्यालियों	अङ्ग्नुलियों	१९	७
विच्चे	विच्चे	१९	१५
विच्चे	विच्चे	१९	१७
रूपर्श	स्पर्श	२०	४
ऐं	ऐं	२०	११
वाक्वों	वाक्यों	२०	१६
दक्षि	-	२१	९
चापगदेषु	चक्रगदेषु	२१	पं० १५ श्लोक
भूषावृताम्	भूषावृताम्	२१	पं० १६
अविन्ध	अविघ्नं	२२	, ११
शाकम्भरीभीमः	शाकम्भरीभीमाः	२३	, ३
खँख्जनी	खड्गिनी	२३	७

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	संकेत
शूलनपाहि	श्लेनपाहि	२३	१०
अङ्ग्न्यान्नमः	अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः	२३	९
विचरन्ति	विचरन्ति	२३	१६
सवेशो	सवेशो	२४	१
ऊँस्लंनमः	ऊँस्लुनमः	२४	४
ऊँफैनमः	ऊँ फैनमः	२४	५
खँख्जालगदा	खड्गशूलगदा	२४	८
ऐंहूली	३० ऐंहूली	२५	मन्त्र ११
मनः	नमः	२५	मन्त्र २४
सू॒नमः	३० ऐं सू॒नमः	२४	मन्त्र ५४
ऊँ छां नमः	ऊँ ऐं छां नमः	२७	१०३
ऐं श्री॑ नमः	ऊँ ऐं श्री॑ नमः	२७	२
ऐं हौं नमः	ऊँ ऐं हौं नमः	२७	४
ऊँ यू॑नमः	ऊँ ऐं यू॑ नमः	२८	३४
३० ऐं मै॒नमः	३० ऐं मै॒ नमः	२८	४६
३० ऐं क्ली॑नमः	३० ऐं क्ली॑नमः	२८	६२
३० ऐं क्रौ॑ शमः	३० ऐं क्रौ॑ नमः	२९	२६
३० ऐं म्लू॑ मनः	३० ऐं म्लू॑ नमः	३०	२६
३० ऐं ३० त्रोनमः	३० ऐं त्रो॑ नमः	३१	६६
३० ऐंग्लू॑ तमः	३० ऐंग्लू॑ नमः	३२	१६
३० छी॑ छी॑ क्ली॑नमः	३० ऐं छी॑ क्ली॑नमः	३२	१७
३० ऐं छां॑ नमा:	३० ऐं छां॑ क्ली॑नमः	३२	१८
३० ऐं फौ॑ मनः	३० ऐं फौ॑ नमः	३५	१३
३० ऐं हस्ली॑ समः	३० ऐं हस्ली॑ नमः	३५	६२
३० क्लू॑ नमः	३० ऐं क्लू॑ नमः	३७	३३

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	संकेत
ॐ ऐं क्रूं तमः	ॐ ऐं क्रूं नमः	३७	मन्त्र ३५
ॐ श्री नमः	ॐ ऐं श्री नमः	३८	” ३
ॐ ह्रीं नमः	ॐ ऐं ह्रीं नमः	३९	” २१
ॐ ह्रीं नमः	ॐ ऐं ह्रीं नमः	३९	” ४१
ॐ ऐं ह्रूं समः	ॐ ऐं ह्रौं नमा	४०	” ३९
नवर्ण नवार्ण	नवार्ण	४१	पंक्ति ३
नवर्ण	नवार्ण	४१	” ५
नवर्णमन्त्रस्य	नवार्णमन्त्रस्य	४१	” ८
प्रतियर्थेविनियोगः	प्रीत्यर्थेजपेविनियोगः	४१	” १२
ॐ यैं नमः	ॐ यैं नमः	४२	” ६
परोक्मल जो	हरोक्मलज्ञो	४२	” १०
हस्तैप्रसन्नाननां	हस्तैःप्रसन्नाननां	४३	” १
पूजा करे	पूजा करे	४३	” ८
परिकल्पयणे	परिकल्पय	४३	” ”
स्वाहा	स्वाहा	४३	” १६
विचर्णित	विचरन्ति	४४	” १४
ॐ ऐं ल्लूतमः	ॐ ऐं ल्लूं नमः	४५	” २०
ॐ ॐ ऐं क्लूनमः	ॐ ऐं क्लूनमः	४६	” ११
ऐं ॐ द्रौं नमः	ॐ ऐं द्रौं नमः	४६	” ११
देवीसूक्तम्	देवीसूक्तम्	४७	” ५
द्वितीय शुभे	द्वितीयेशुभे	४७	” १७
भगवान्	भगवान्	५२	” २
उद्धर	उद्धार	ख	” ११
ऐंह्रींचामुण्डायैविच्चे	ऐंह्रींचामुण्डायैविच्चे	ख	” ११



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!

